मुद्राणी

आठवां अंक

75TH YEAR OF INDEPENDENCE
आज़ादी का अमृत महोत्सव
₹1

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
GOVERNMENT OF INDIA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2023

75TH YEAR OF INDEPENDENCE
2022
आज़ादी का अमृत महोत्सव
₹2

75TH YEAR OF INDEPENDENCE
2022
आज़ादी का अमृत महोत्सव
₹5

75TH YEAR OF INDEPENDENCE
2021
आज़ादी का अमृत महोत्सव
₹10

75TH YEAR OF INDEPENDENCE
2022
आज़ादी का अमृत महोत्सव
₹20

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 14–15 सितंबर, 2024 को माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में दो दिवसीय चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी द्वारा कंठस्थ–2.0 का लोकापर्ण तथा ''राजभाषा का हीरक जयंती वर्ष'' थीम पर स्मारक डाक टिकट जारी किया गया।

राजभाषा पत्रिका

वार्षिक : आठवां अंक–2024

संरक्षक :

श्री दुर्गेश पति तिवारी

मुख्य महाप्रबंधक

उप संरक्षक :

श्री रविन्द्र सिंह

संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.)

प्रकाशन समिति

श्रीमती अनिला अग्रवाल

संयुक्त महाप्रबंधक (वि.एवं ले.)

श्री प्रकाश कुमार

संयुक्त महाप्रबंधक (मा.सं)

सुश्री रेणु भसीन

उप महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादक

श्री हीरा मणि सुयाल

उप प्रबंधक (रा.भा.)

सहयोग

श्री आशीष शर्मा,

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ	पृष्ठ सं.
1	संदेश-अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	1
2	संदेश-निदेशक (मानव संसाधन)	2
3	संदेश-निदेशक (वित्त)	3
4	संदेश-मुख्य सतर्कता अधिकारी	4
5	संरक्षक की कलम से	5
6	संपादकीय	6
7	साइबर सुरक्षा	7-9
8	गंबरिमासु	10-12
9	मुस्कुराते रहिऐ जनाब - कविता	13
10	मन की शांति	14
11	राजभाषा हिंदी समाचार	15-16
12	श्रम संहिता और श्रमिंको के अधिकार	17-20
13	भारत में वित्तीय साक्षरता	21-22
14	प्रकृति से सीखें	23-24
15	देवी स्थान के शिखर पर महादेवी	25
16	पूर्ण भरोसा	26
17	सिक्कों की कहानी - अनुज की जुबानी	27-28
18	चल पड़ा शहर की ओर	29
19	जीवन में अनुकरणीय बातें	30-31
20	पत्रकारिता	32-33
21	सूरज चला शिकार पर	34-35
22	रोटी	36
23	हिंदी साहित्य का इतिहास	37-39
24	गतिविधियाँ	40-42
25	गणतंत्र दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस	43

"पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।"

आवरण एवं डीटीपी

आर एस वी पी ट्रेंडिग कॉर्पोरेशन

विजय रंजन सिंह
VIJAY RANJAN SINGH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman and Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनीरत्न श्रेणी । सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Miniratan Category-I,CPSE
(Wholly owned by, Govt. of India)

संदेश

मुझे यह जानकार अति प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी'के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी एक ऐसी अविरल धारा है जो सम्पूर्ण भारत में सतत प्रवाहित हो रही है और विविधताओं से भरे देश के लोगों को जोड़ने का कार्य कर रही है। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी या अवरोधक नहीं है बल्कि उनकी सखी और सहोदरी है। अतः हिंदी को सभी भाषा भाषियों द्वारा बेहिचक स्वीकार किया जाना चाहिए।

इकाई के राजभाषा विभाग के कर्तव्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व है। यह पत्रिका न केवल उस दायित्व का निर्वाह करती है वरन् संपूर्ण इकाई के विभिन्न विभागों/अनुभागों आदि में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच भी प्रदान करती है। मेरा विश्वास है कि गृह पत्रिका में अधिकाधिक कर्मचारियों की भागीदारी से राजभाषा को गति एवं दिशा मिलने के साथ–साथ गृह पत्रिका का साहित्य भी समृद्ध होगा ।

गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारी,संपादक मण्डल के सदस्य एवं रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं। मैं उन्हें भी गृह पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई व शुभकामनायें देता हूँ।

आप सभी के सुखद जीवन की शुभकामनाएँ।

22/2/24.

(विजय रंजन सिंह)

16वाँ तल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली -110001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110001
फोन. / Tel.:+91-11-2370122, 43582200 फैक्स. / Fax.: +91-11-2370122
ई–मेल/ Email: cmd@spmcil.com, वेब./ web.: : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

सुनील कुमार सिन्हा
Sunil Kumar Sinha
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनीरत्न श्रेणी । सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Miniratan Category-I,CPSE
(Wholly owned by, Govt. of India)

संदेश

यह अत्यंत सुखद समाचार है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी'के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके लिए पत्रिका का संपादक मण्डल, रचनाकार तथा इसके प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

राष्ट्रीय आंदोलन के समय से ही राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करने में हिंदी की बड़ी अहम भूमिका रही है। हिंदी ने विभिन्न भाषा –भाषियों को जोड़ने का कार्य किया है। आजकल तो हिंदी का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि आपको देश के हर कोने में हिंदी बोलने और समझने वाले लोग मिल जाएँगे। अंजान शहरों या सुदूरवर्ती इलाकों में लोकभाषाओं और लोकबोलियों के साथ–साथ हिंदी के स्वर सुनाई देते हैं तो हमें अपनेपन और एक होने का अद्‌भुद एहसास होता है। यही हिंदी की शक्ति है।

जहां तक राजभाषा हिंदी की बात है गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी की प्रगति के लिए कई मानक स्थापित किए गए हैं जिनकी नियमित निगरानी राजभाषा विभाग के द्वारा की जाती है। राजभाषाई प्रावधानों के अनुसार भारत सरकार टकसाल, नोएडा 'क' क्षेत्र में स्थित इकाई है जिसके लक्ष्य "ख" एवं "ग" भाषा क्षेत्रों से बढ़कर हैं। अतः इस दिशा में अपेक्षित है कि वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को मानदंड मानते हुए अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में किया जाये। कर्मचारियों को चाहिए कि वे कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए राजभाषाई ई–टूल्स, यूनिकोड, की–बोर्ड,मानक शब्दकोश जैसे साधनों का प्रयोग करें।

मैं गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" के इस अंक की सफलता की कामना करते हुए पुनः गृह पत्रिका के संपादक मण्डल एवं समस्त रचनाकारों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित,

(सुनील कुमार सिन्हा)

16वाँ तल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली -110001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110001
फोन. / Tel.:+91-11-2370122, 43582200 फैक्स. / Fax.: +91-11-2370122
ई–मेल/ Email: cmd@spmcil.com, वेब./ web.: : www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

अजय अग्रवाल
AJAY AGARWAL
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
मिनीरत्न श्रेणी । सीपीएसई
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)
Miniratan Category-I,CPSE
(Wholly owned by, Govt. of India)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी'के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इकाई के सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण इस अंक को मूर्त रूप देने के लिए बधाई के पात्र हैं।

वर्तमान में हिंदी विश्वभाषा बनने के पथ पर अग्रसर है। अनेक वैश्विक मंचों पर हमारा भाषाई गौरव बढ़ रहा है, जो सभी भाषा प्रेमियों के लिए गर्व की बात है। साथ ही, भारत सरकार द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार तथा उन्नयन हेतु भी गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। अतः संस्थान के कर्मचारीगण से भी अपेक्षित है कि वे राजभाषा हिंदी के बढ़ते महत्व और व्यापकता को समझते हुए अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें।

गृह पत्रिका का साहित्य एक समावेशी साहित्य होता है जिसमें मनोरंजक साहित्य एवं राजभाषा की जानकारियाँ संकलित होती हैं। साथ ही,यह कार्यालय की भावनात्मक अभिव्यकक्ति का भी सशक्त माध्यम होता है तथा इसका साहित्य न केवल पाठक वर्ग को आनंदित करता है बल्कि उनका ज्ञानवर्द्धन भी करता है। इसके अलावा, कर्मचारियों को भी गृह पत्रिका में साहित्य रचने के अवसर भी उपलब्ध कराती है।

मैं इकाई की गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" के नवीन अंक के प्रकाशन के लिए पुनः इकाई के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ तथा ईश्वर से आप सभी के सुखद जीवन की कामना करता हूँ।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)

16वाँ तल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली -110001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110001
फोन. / Tel.:+91-11-43582215, फैक्स. / Fax.: +91-11-43582216
ई-मेल/ Email: df@spmcil.com,ajay.agarwal@spmcil.com वेब./ web.: www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

विनय कुमार सिंह, भा.रा.से
Vinay K. Singh, I.R.S.
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer

सत्यमेव जयते

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
(Under Ministry of Finance, Govt. of India)

संदेश

यह जानकार मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। गृह पत्रिका के प्रकाशन के लिए इकाई के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं गृह पत्रिका के संपादक मण्डल को बधाई और शुभकामनाएँ।

राजभाषा हिंदी का इतिहास और इसे अपनाने की कहानी बड़ी ही रोचक है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि संविधान सभा में राजभाषा हिंदी की पैरवी करने के लिए गैर हिंदी भाषी राज्यों के लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । जिसके परिणामस्वरूप गंभीर चर्चा एवं डिबेट के पश्चात हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ और समय की धारा के साथ हिंदी भारतवासियों के मन में बस गई।

हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के पश्चात सरकार द्वारा कार्यालयों के कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा रहा है। सरकार द्वारा पुरस्कार एवं प्रोत्साहन की नीति अपनाते हुए यह प्रयास किए जा रहे हैं कि गैर–हिंदी भाषी कर्मचारी भी हिंदी को सहर्ष स्वीकार करें और कार्यालयों में इसका प्रयोग करें।

मैं कामना करता हूँ कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा राजभाषा के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी निरंतर प्रगति करता रहे और नए कीर्तिमान स्थापित करता रहे। मैं पुनः इकाई की गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

(विनय कुमार सिंह)

16वाँ तल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली -110001
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi - 110001
फोन. / Tel.:+91-11-43582260, फैक्स. / Fax.: +91-11-43582202
ई–मेल/ Email: cvo@spmcil.com, वेब./ web.: www.spmcil.com
CIN : U22213DL2006GOI144763

दुर्गेश पति तिवारी
Durgesh Pati Tiwari
मुख्य महाप्रबंधक
Chief General Manager
भारत सरकार टकसाल, नोएडा
India Government Mint, Noida
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)
A Unit of Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
डी–2, सेक्टर –1, नोएडा/ D-2, Sector-1, Noida-201301

संरक्षक की कलम से

मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" का आठवाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए इकाई के सभी कर्मचारियों को बधाई और शुभकामनाएँ।

भारत विविधताओं का देश है जहां विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। इन्हीं क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों के बीच हिंदी हमें सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम उपलब्ध कराती है। आप सभी यह जानते होंगे कि भारत सरकार राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए गंभीरता से कार्य कर रही है। इसी वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए आदरणीय गृहमंत्री महोदय द्वारा भी हिंदी के महत्व और इतिहास को याद करने और राजभाषा तथा जनभाषा की दूरी को पाटने का संदेश दिया गया है।

राजभाषा प्रावधानों के अनुसार हमारी इकाई 'क' क्षेत्र में स्थित है जिसका लक्ष्य शत–प्रतिशत हिंदी में कार्य करना है। मुझे आशा और विश्वास है कि आप सब इस दिशा में आधिकारिक तथा व्यक्तिगत रूप से हर संभव प्रयास करेंगे और इकाई में निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित करेंगे।

गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" में आलेख देने वाले सभी रचनाकारों के प्रयास प्रशंसनीय हैं। साथ ही, मैं गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" का प्रकाशन करने तथा नए कलेवर में प्रस्तुत करने के लिए संपादक मण्डल, इस कार्य से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण को साधुवाद एवं बधाई देता हूँ।

(दुर्गेश पति तिवारी)

संपादकीय

प्रिय पाठको,

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका ''मुद्रावाणी'' का आठवां अंक आपके समक्ष रखते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। यह आप सभी के स्नेह का ही प्रतिफल है कि गृह पत्रिका को समय पर तैयार कर इसका प्रकाशन किया जा सका।

यह अंक अपने आप में विविध जानकारियां, आलेख, कविताएं जैसी रचनाएँ समेटे हुए है जिसका श्रेय मैं समस्त रचनाकारों को देता हूँ । साथ ही ''राजभाषा अनुभाग'' द्वारा भी कुछ विशेष आलेख एवं राजभाषा हिंदी के समाचार इस अंक में दिए गये हैं, जिनसे आपका ज्ञानवर्द्धन एवं मनोरंजन होगा।

गृह पत्रिका के लिए निगम के उच्च प्रबंधन एवं संरक्षक महोदय से भी हमें उनके संदेशों के रूप में आशीष प्राप्त हुआ है जिसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। उनका द्वारा इकाई मे राजभाषा के क्षेत्र में प्रगति और उन्नति करने की अपेक्षा की गई है जिस पर खरा उतरने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने होंगें।

गृह पत्रिका के संपादक मंडल एवं पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जुड़े सभी कर्मचारियों को मैं गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए धन्यवाद देता हूँ। और आशा करता हूँ कि उनका मार्गदर्शन एवं सहयोग मुझे भविष्य में भी मिलता रहेगा।

(हीरा मणि सुयाल)
उप प्रबंधक (रा.भा.)

साइबर सुरक्षाः एक अपरिहार्य आवश्यकता

रविंदर सिंह
संयुक्त महाप्रबंधक (तक.)

आज की दुनिया में डिजिटल तकनीक और इंटरनेट का प्रयोग अभूतपूर्व रूप से बढ़ रहा है। चाहे व्यक्तिगत हो या पेशेवर, हमारा जीवन इंटरनेट से गहराई से जुड़ चुका है। बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, शॉपिंग, और सोशल मीडिया जैसे विभिन्न क्षेत्रों में इंटरनेट का उपयोग हो रहा है। इसके साथ ही, साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। यह न केवल व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के लिए खतरनाक है, बल्कि पूरे देश की सुरक्षा को भी खतरे में डाल सकता है। इसलिए, साइबर सुरक्षा की आवश्यकता आज के समय में अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

साइबर सुरक्षा क्या है?

साइबर सुरक्षा का तात्पर्य है कंप्यूटर, नेटवर्क, डेटा और प्रोग्राम्स को अनाधिकृत एक्सेस, हमलों या किसी भी प्रकार के नुकसान से सुरक्षित रखना। इसका उद्देश्य साइबर हमलों से बचाव करना और संवेदनशील जानकारी को सुरक्षित रखना है। साइबर सुरक्षा का दायरा बहुत बड़ा है और इसमें नेटवर्क सुरक्षा, सूचना सुरक्षा, ऑपरेशन सुरक्षा, एप्लिकेशन सुरक्षा और क्लाउड सुरक्षा शामिल हैं।

साइबर अपराध के प्रकार

फिशिंग : फिशिंग साइबर अपराध का एक प्रकार है जिसमें अपराधी नकली ईमेल या वेबसाइट्स का उपयोग करके व्यक्तिगत जानकारी, जैसे बैंक अकाउंट नंबर, पासवर्ड, आदि को चुराने की कोशिश करते हैं। आमतौर पर, यह ईमेल विश्वसनीय स्रोतों से आए हुए लगते हैं, लेकिन वास्तव में वे साइबर अपराधी होते हैं।

मैलवेयर : मैलवेयर एक प्रकार का दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर होता है जो आपके कंप्यूटर या मोबाइल में घुसपैठ कर सकता है और डेटा को नुकसान पहुँचा सकता है। इसमें वायरस, वर्म्स, ट्रोजन, रैंसमवेयर आदि शामिल होते हैं।

रैंसमवेयर : रैंसमवेयर एक ऐसा मैलवेयर होता है जो आपके कंप्यूटर को लॉक कर देता है और फिर उसे अनलॉक करने के लिए फिरौती की मांग करता है। यह साइबर हमलों का एक प्रमुख प्रकार बनता जा रहा है और अक्सर व्यक्तिगत व संवेदनशील जानकारी को निशाना बनाता है।

सोशल इंजीनियरिंग : यह एक साइबर अपराध की तकनीक है जिसमें लोगों को धोखे से व्यक्तिगत जानकारी देने के लिए उकसाया जाता है। इसमें फिशिंग, प्रीटेक्स्टिंग, और बाइटिंग जैसी तकनीकें शामिल होती हैं।

डीडॉस (DDoS) हमले : यह हमले उन वेबसाइट्स या सर्वरों पर होते हैं, जो इंटरनेट सेवाएं प्रदान करते हैं। इसमें एक समय पर बहुत सारे ट्रैफिक भेजकर सिस्टम को ठप करने की कोशिश की जाती है।

साइबर सुरक्षा के उपाय

मजबूत पासवर्ड का उपयोग : एक मजबूत पासवर्ड साइबर सुरक्षा की पहली कड़ी है। पासवर्ड में अक्षर, अंक, और विशेष प्रतीकों का मिश्रण होना चाहिए और इसे नियमित रूप से बदलते रहना चाहिए। इससे आपका अकाउंट अनाधिकृत एक्सेस से सुरक्षित रहेगा।

दो–चरणीय प्रमाणीकरण : दो–चरणीय प्रमाणीकरण का मतलब है कि लॉगिन करते समय आपको पासवर्ड के साथ–साथ एक और अतिरिक्त सत्यापन प्रक्रिया से गुजरना होगा, जैसे कि ओटीपी या बायोमेट्रिक डेटा। यह आपकी सुरक्षा को और बढ़ा देता है।

एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का उपयोग : एंटीवायरस सॉफ्टवेयर आपके सिस्टम को मैलवेयर और अन्य साइबर हमलों से बचाता है। इसे हमेशा अपडेट रखना चाहिए ताकि नए खतरों से बचाव किया जा सके।

नियमित बैकअप : महत्वपूर्ण डेटा का बैकअप नियमित रूप से करना आवश्यक है। यह सुनिश्चित करेगा कि साइबर हमले की स्थिति में आपका डेटा सुरक्षित रहेगा और उसे पुनः प्राप्त किया जा सकेगा।

सुरक्षित वाई–फाई का उपयोग : सार्वजनिक वाई–फाई नेटवर्क्स साइबर हमलों के लिए बहुत असुरक्षित होते हैं। इसलिए हमेशा एक सुरक्षित और एन्क्रिप्टेड वाई–फाई नेटवर्क का उपयोग करना चाहिए।

ऑनलाइन गतिविधियों में सावधानी : इंटरनेट पर कोई भी जानकारी साझा करने से पहले यह सुनिश्चित करें कि वह साइट या प्लेटफॉर्म सुरक्षित है। अपरिचित ईमेल लिंक या अटैचमेंट पर क्लिक करने से बचें, क्योंकि वे फिशिंग हमलों का माध्यम हो सकते हैं।

सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास

साइबर सुरक्षा को बढ़ाने के लिए सरकारें भी कई कदम उठा रही हैं। भारत सरकार ने साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए कुछ प्रमुख योजनाएं और नीतियाँ लागू की हैं:

राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति : यह नीति देश के साइबर इन्फ्रास्ट्रक्चर को सुरक्षित रखने के लिए बनाई गई है। इसमें साइबर खतरों की पहचान, प्रतिक्रिया, और सुरक्षा के लिए उपायों का उल्लेख है।

सर्ट–इन (CERT-In) : यह भारतीय सरकारी एजेंसी है जो साइबर खतरों का सामना करने के लिए कार्य करती है। यह साइबर हमलों की निगरानी करती है और उन्हें रोकने के लिए तत्काल कार्रवाई करती है।

डिजिटल इंडिया अभियान : भारत सरकार का डिजिटल इंडिया अभियान लोगों को डिजिटल सेवाओं से जोड़ने का प्रयास है। इसके तहत साइबर सुरक्षा को भी एक प्रमुख मुद्दा माना गया है और इसे मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं।

साइबर सुरक्षा में चुनौतियाँ

तेजी से बदलती तकनीक : तकनीक की दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है और इसके साथ ही साइबर अपराधों के तरीके भी बदल रहे हैं। नई–नई तकनीकें आने से उनके साथ आने वाले खतरों का अंदाजा लगाना और उनसे निपटना मुश्किल हो जाता है।

कुशल पेशेवरों की कमी : साइबर सुरक्षा क्षेत्र में कुशल पेशेवरों की कमी है। जितनी तेजी से साइबर अपराध बढ़ रहे हैं, उस तेजी से साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की संख्या नहीं बढ़ रही है।

लोगों में जागरूकता की कमी : साइबर सुरक्षा के प्रति आम जनता में जागरूकता की कमी है। लोग अपने डेटा और ऑनलाइन गतिविधियों के प्रति लापरवाह होते हैं, जो उन्हें साइबर अपराधों का शिकार बना सकता है।

निष्कर्ष

साइबर सुरक्षा आज के डिजिटल युग में एक अपरिहार्य आवश्यकता है। यह केवल आईटी पेशेवरों का काम नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति और संगठन की जिम्मेदारी है कि वे अपनी डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें। हमें अपने डेटा, जानकारी और गोपनीयता को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना, सुरक्षा उपायों का पालन और नियमित रूप से अपने सिस्टम और डेटा की निगरानी करना न केवल व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि यह पूरे समाज और देश की सुरक्षा के लिए भी अनिवार्य है।

गंबरिमासु
(इकिगाई – "जीवन का उद्देश्य" पुस्तक से)

प्रकाश कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक (मा.सं.)

धैर्य और दृढ़ता की शक्ति

"गंबरिमासु" जापानी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ होता है – "मुझे अपनी पूरी कोशिश करनी है" इसी बात के लिए जापानी लोग विश्वप्रसिद्ध हैं। क्योटो में जिस बुलेट ट्रेन से लोग आज बड़ी आसानी से यात्रा करते हैं उसे देखकर लगता है कि जैसे वह पटरियों के ऊपर उड़ान भर रही हो। यह उन इंजीनियरों द्वारा किए गए अथक परिश्रम का फल है, जिन्होंने अपने सपने को तब तक नहीं छोड़ा जब तक कि उसे हासिल न कर लिया।

दृढ़ता जापानी मानसिकता के सबसे महत्वपूर्ण मूल्यों में से एक है। कई जापानी कॉमिक्स और एनिमेटेड शो में यह दिखाया जाता है कि कहानी का मुख्य पात्र अक्सर बचपन में महान क्षमताओं के बजाय सामान्य या दुर्बलता अथवा अभाव के साथ जीवन जीते हैं लेकिन उनके पास जीवन में एक उद्देश्य या लक्ष्य होता है–एक इकिगाई (जीवन का उद्देश्य) जो उन्हें बाधाओं से लड़ने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

इस व्यक्तिगत क्षितिज के माध्यम से आप स्वयं को जानेंगे और निरंतर आत्म–सुधार का अनुभव करेंगे जब तक कि आप वह नायक और नेतृत्व क्षमता से लैस व्यक्ति नहीं बन जाते जो आप बनना चाहते हैं। यह उस कहानी की तुलना में कहीं अधिक यथार्थवादी, वास्तविक और हासिल करने योग्य है जिसमें नायक की सुपर शक्तियां जन्मजात होती हैं तथा जिन्हें प्रेरणा देने वाली ड्राइव क्रोध, महत्वाकांक्षा या प्रतिशोध की इच्छा से उत्पन्न होती हैं।

आसान लक्ष्य महान उपलब्धियों की ओर ले जाते हैं

जापानी नायकों की एक और विशेषता यह है कि उनके लक्ष्य और विचार स्पष्ट, सरल और शुद्ध होते हैं जिनमें कोई जटिलता या बुराई नहीं होती। उनकी कोई बहुत बड़ी महत्वाकांक्षाएँ भी नहीं होती। जैसे ठेठ मंगा (कॉमिक्स) का मुख्य पात्र एक अच्छा रसोइया या अपने राज्य का सबसे अच्छा टेलीविजन कार्यक्रम प्रस्तुतिकर्ता अथवा रियल एस्टेट एजेंट बनाना चाहता है। यहाँ तक कि इस से जुड़ी एक टेलीविजन सीरीज भी है– **"शिंकनसेन गर्ल"** जिसका अर्थ है बुलेट ट्रेन में काम करने वाली बालिका। यह बुलेट ट्रेन में यात्री सेवा

करने वाली परिचारिकाओं के जीवन के बारे में है जिसमें यह दिखाया जाता है कि कैसे वे हमेशा अपने कार्यक्षेत्र में निरंतर सुधार करने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

वे आसान और सरल लक्ष्य रखते हैं जिन्हें बहुत आसानी से हासिल किया जा सकता है। सरल लक्ष्यों में भी दृढ़ता से लगे रहने से महान व्यक्तिगत उपलब्धियां हासिल होती हैं।

दृढ़ता के साथ–साथ धैर्य भी एक ऐसा गुण है जिसका जापानी लोग लगातार अभ्यास करते हैं। धैर्य का अर्थ यह नहीं है कि वे चुपचाप चीजों के घटित होने का इंतजार करते हैं या जीवन में किसी चमत्कार के होने की उम्मीद करते हैं । इसका अर्थ है कि वे दृढ़ता के साथ धैर्य का अभ्यास तब तक करते रहते हैं जब तक कि वे वह हासिल नहीं कर लेते जो वे करना चाहते हैं या पाना चाहते हैं। एक जापानी कहावत है कि **''यदि आप किसी चट्टान को गर्म करना चाहते हैं, तो उस पर सौ साल तक बैठे रहो।"**

किसी कार्य को यथासंभव अच्छे ढंग से करना

जापानी भाषा में दृढ़ता का मूल्य सर्वव्यापी है और दैनिक आधार पर उपयोग की जाने वाली अनेक अभिव्यक्तियों में भी इसका महत्व है। जापानी भाषा का अध्ययन करते समय आप जो पहला शब्द सीखते हैं, वह है गंबरिमासु जिसका अनुवाद है कि ''जितना संभव हो सके उतना अच्छा करना'' या "मुझे अपनी पूरी कोशिश करनी है"। यदि इस शब्द पर गहराई से विचार किया जाये तो यह पता चलता है कि इस शब्द के पहले व दूसरे अक्षरों का अर्थ क्रमशः "जिद्दी" या ''दृढ़'' और ''खिंचाव'' या ''विस्तार करना'' है। कुल मिलाकर इसका अर्थ कुछ इस प्रकार होगा कि ''अपनी जिद या उद्देश्य को जहां तक संभव हो, आगे बढ़ाना और इसका विस्तार करना।''

"गंबरिमासु" शब्द "गनबट्टे कुदासाई" अभिव्यक्ति के केंद्र में है जिसका अर्थ है ''जितना संभव हो सके उतना अच्छा करो'' जब तक आप वह हासिल नहीं कर लेते जो आप करना चाहते हैं।'' इसका प्रयोग व्यापक रूप से खेल जगत में परस्पर प्रोत्साहन बढ़ाने के लिए और व्यापार जगत में नई चुनौतियों का सामना करते समय अक्सर किया जाता है। इस प्रकार "गंबरिमासु" दर्शन का अर्थ है "तब तक न रुकना, जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"।

जापान में अगले 100 साल की योजना

जापान में टोक्यो को नागोया (286 किमी) से चालीस मिनट से भी कम समय में जोड़ने वाली नई बुलेट ट्रेन वर्ष 2027 में चालू हो जाएगी। और न केवल 2027 तक, बल्कि 2045 में ओसाका तक पहुंचने के लिए भी उसी चुंबकीय उत्तोलन प्रणाली (मैग्नेटिक लेविटेशन सिस्टम)

का उपयोग करने की विस्तृत योजना भी पहले से ही तैयार की जा चुकी है। इस तरह यह गणना की गई है कि वर्ष 2120 तक प्रौद्योगिकी में किए गए इस निवेश पर ऋण लेने की जरूरत नहीं होगी बल्कि जापान रेलवे और जापानी सरकार के लिए यह लाभ भी कमाना शुरू कर देगा।

अपनी निजी बुलेट ट्रेन को तेज गति से चलाने से पहले यह स्पष्ट होना जरूरी है कि हमारा अंतिम गंतव्य क्या है और हमें किन स्टेशनों पर रुकना होगा। ऊपर विस्तृत रूप से चर्चा किए गए दृढ़ता और गंबारिमासु द्वारा संचालित शिंकनसेन प्रभाव को इस सूत्र द्वारा संक्षेपित किया जा सकता है– अकर्मण्य होकर धैर्य रखना निष्क्रिय जीवन की ओर ले जाता है, दृढ़ता के साथ धैर्य रखने से ही हम अपने लक्ष्यों को पूरा कर पाते हैं।

भाषा की ध्वस्त पारिस्थितिकी में

प्लास्टिक के पेड़
नाइलॉन के फूल
रबर की चिड़ियाँ
टेप पर भूले–बिसरे
लोकगीतों की
उदास लड़ियाँ...

एक पेड़ जब सूखता
सबसे पहले सूखते
उसके सबसे कोमल हिस्से
उसके फूल
उसकी पत्तियाँ

एक भाषा जब सूखती
शब्द खोने लगते अपना कवित्व
भावों की ताजगी
विचारों की सत्यता।

बढ़ने लगते लोगों के बीच
अपरिचय के उजाड़ और खाइयाँ...

सोच में हूँ कि सोच के प्रकरण में
किस तरह कुछ कहा जाए
कि सबका ध्यान उनकी ओर हो
जिनका ध्यान सबकी ओर है।

कि भाषा की ध्वस्त पारिस्थितिकी में
आग यदि लगी तो पहले वहाँ लगेगी
जहाँ ठूँठ हो चुकी होंगी
अपनी जमीन से
रस खींच सकने वाली शक्तियाँ।

–कुंवर नारायण

मुस्कुराते रहिए जनाब

रामानंद कुमार
बुलियन लेखाकार

हो हजारों उलझनें राहों में,
जाओ ईश्वर की पनाह में,
कोशिशें करो बेहिसाब ,
मुस्कुराते रहिए जनाब।

हो तिमिर कितना भी गहरा,
हो रोशनी पर लाख पहरा,
सूर्य न पहन पाएगा नकाब,
मुस्कुराते रहिए जनाब।

हो समय कितना भी भारी,
हमने ना उम्मीद हारी,
किस – किस को दें जवाब,
मुस्कुराते रहिए जनाब।

थक गए हैं सब अकेले ,
फिर लगेंगे जहाँ में मेले,
किस्मत मानो न खराब,
मुस्कुराते रहिए जनाब।

ये रंजो गम झमेले,
जीवन में साथ चलेंगे,
आएगा जीवन में शवाब,
मुस्कुराते रहिए जनाब।

मन की शांति

संचित बत्रा
सचिवीय सहायक

"सच है कि पैसों से बहुत कुछ खरीदा जा सकता है लेकिन संतोष और मन की शांति को पैसों से नहीं खरीद सकते। यह एक ऐसी चीज है जो हमें अपने अन्दर विकसित और धारण करनी होती है। आज दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं जिनके पास अथाह संपत्ति है पर फिर भी वे खुद को कंगाल समझते हैं क्योंकि उनके पास मन की शांति नहीं है। सफलता प्राप्त करने के लिए मन की शांति होना बहुत जरूरी है। एक अशांत और चिंतित मन से आप किसी बढ़िया परिणाम की उम्मीद नहीं कर सकते। अशांत मन किसी भी काम पर पूरा फोकस ठीक से नहीं कर पाता जिससे कोई भी कार्य अपने सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता। एक तनावपूर्ण और प्रसन्नचित दोनों तरह के मनोस्थिति में किए गए कामों का अवलोकन करके देखिए। जो काम प्रसन्नचित्त होकर पूरी शांति के साथ किया जाता है उसकी गुणवत्ता ही कुछ अलग होती है।

शांति की शुरुआत मुस्कराहट के साथ होती है। सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग मन की शांति है। मन की शांति आपके मन से ही शुरू होती है और मन पर ही खत्म होती है। जीवन के प्रति सकारात्मकता और मन की शांति का आपस में गहरा संबंध है। एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबतों को भी आसानी से पार कर जाता है। जिसे मन को शांति रखने की कला आती है वो सच्चे अर्थों में एक बहुत ही चतुर इन्सान है। ऐसा व्यक्ति हरदम खुश रहता है और नकारात्मकता उसके पास भी नहीं फटकती। अगर आप सकारात्मक सोच और शांत मन दोनों को एक साथ बनाए रख सकते हैं तो आप अपने जीवन में खुश रहना सीख सकते हैं। एक शांत और प्रसन्न चित्त मस्तिष्क बड़ी से बड़ी समस्या को भी आसानी से हल कर लेता है। शांत चित्त और तरोताजा दिमाग से ही हम सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

ईश्वर ने हम सबको अलग–अलग विशेषताओं के साथ बनाया है इसीलिए शांति प्राप्त करने के हमारे तरीके भी एक जैसे हों ये जरूरी नहीं। जरूरी ये है कि हमें वो तरीका पता हो जो हमारे लिए उपयुक्त हो। अगर आपको ध्यान करके मन की शांति मिलती है तो वो आपके लिए सही तरीका है लेकिन अगर किसी का इसमें मन नहीं लगता और संगीत सुनकर शांति का अनुभव करता है तो उसके लिए ये सही तरीका है। इसी तरह किसी को सामाजिक कार्य करके तो किसी को खेल में लीन होकर तो किसी को बच्चों के साथ समय बिता कर मन की शांति मिल सकती है। तरीका जो भी हो मन की शांति जरूर प्राप्त करनी चाहिए।

मन की शांति एक बड़ा लक्ष्य है, चलिए हम सब मिलकर अपने–अपने जीवन में इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और अपने–अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं।

राजभाषा अनुभाग द्वारा संकलित हिंदी एवं साहित्य समाचार

कम बोलने वाला मनुष्य कभी बिना सोचे-विचारे नहीं बोलेगा, वह अपना प्रत्येक शब्द तोलकर बोलने। - महात्मा गाँधी

राजभाषा अनुभाग द्वारा संकलित हिंदी एवं साहित्य समाचार

बड़बोलापन

जब से होश संभाला, मुख्य रूप से हिंदी को ही बिछाता-ओढ़ता हूं, हिंदी का ही खाता-पीता हूं, यद्यपि कभी किसी भाषा से विद्वेष-वैमनस्य नहीं रहा. जब भी सितंबर आता है, तो मैं कुछ अधिक बेचैन हो जाता हूं. कथित रूप से हिंदी प्रेमी समाज और संस्थाओं के लिए यह त्योहार का मास होता है. अपनी-अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी मास के नाम से आयोजन होते हैं. हिंदी के महत्व के बारे में एक-सी बातें दुहरायी जाती हैं, एक-से संकल्प लिये जाते हैं. इसलिए इस वर्ष मैंने सोचा था कि हिंदी दिवस पर न किसी आयोजन का हिस्सा बनूंगा, न इस पर कुछ कहूंगा. पर जब बड़े-बड़े प्रण टूट जाते हैं, तब यह तो एक मामूली आदमी का सोचना था. जब मन की बात कहने की स्वतंत्रता दी गयी तथा आदर भरा अनुरोध मिला, तो टाला नहीं गया.

डॉ सुरेश पंत
भाषाविद
drsureshpant@gmail.com

विडंबना यह है कि चोटी के भाषा वैज्ञानिकों, लिपि विज्ञानियों, तकनीकी विशेषज्ञों, लेखकों, शिक्षकों के सहयोग से निर्मित संस्तुतियां अपनायी नहीं जा रहीं. परिणाम स्वरूप शब्दों की वर्तनी में नितांत अनुशासनहीनता पायी जाती है. लेखकों में मत वैभिन्य है.

देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है. हिंदी का अमृत काल तो पूरा होने को है. पर संविधान ने हिंदी के प्रचार-प्रसार का दायित्व जिसे सौंपा है, उससे कोई नहीं पूछता कि इतने सारे आयोजनों के बाद भी सफलता मिली कितनी है. प्रगति का लेखा-जोखा आंकड़ों से पुष्ट करने का रिवाज है और संबद्ध मंत्रालय कभी भी बता सकता है कि किस मद में कितने और कहां खर्च हुए, लेकिन उसका वास्तविक प्रतिफल क्या रहा, यह पता कैसे लगे! सरकार की विज्ञप्तियां विचित्र हिंदी में होती हैं. अनेक अन्य महत्वपूर्ण कार्य के निष्पादन भी ठीक से बरते नहीं जा रहे हैं. यों कहें कि अभी उनका अधिक प्रचार नहीं है और लोग लाभ नहीं उठा पा रहे हैं.

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने एक अनूठी वेबसाइट प्रारंभ की है, जो संविधान स्वीकृत सभी 22 आधिकारिक भारतीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावली उपलब्ध कराती है. अभी तक इस पोर्टल पर लगभग 22,00,000 शब्दों वाली कुल 322 शब्दावलियां उपलब्ध हैं. यह संख्या अभी और बढ़ेगी क्योंकि निजी संस्थानों से भी अनुरोध किया गया है कि वे अपने कार्य को इस मंच पर साझा कर सकते हैं. शिक्षा मंत्रालय के ही अंतर्गत केंद्रीय हिंदी निदेशालय शब्दकोश निर्माण, पत्राचार से हिंदी शिक्षण, हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रोत्साहन, अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों को सम्मानित करना जैसी अनेक गतिविधियों के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण कार्य साठ के दशक से कर रहा है- हिंदी की मानक वर्तनी का निर्माण और उसमें सतत संशोधन. देवनागरी लिपि के मानकीकरण की परिशोधित नवीनतम नियमावली केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है. विडंबना यह है कि चोटी के भाषा वैज्ञानिकों, लिपि विज्ञानियों, तकनीकी विशेषज्ञों, लेखकों, शिक्षकों के सहयोग से निर्मित संस्तुतियां अपनायी नहीं जा रहीं. परिणाम स्वरूप शब्दों की वर्तनी में नितांत अनुशासनहीनता पायी जाती है. लेखकों में मत वैभिन्य है. हिंदी समाचार पत्रों की कोई भाषा नीति नहीं है. अति उत्साही एंकर-पत्रकार हिंदी में अंग्रेजी को बरतना अपना मूल अधिकार समझते हैं. इसके पक्ष में वे विचित्र तर्क भी देते हैं.

हिंदी क्षेत्र हिंदी को लेकर कुछ विकट मानसिक स्थिति से गुजर रहा है. इस मसले पर हम भावनाओं के अतिरेक में अजीब-अजीब बातें कह जाते हैं, जो सच नहीं होतीं, जैसे 'हिंदी संसार की सबसे बड़ी भाषा है', वह 'संसार की एकमात्र भाषा है, जो पूर्णतः वैज्ञानिक है', 'हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है', 'हम सब भारतीयों की मातृभाषा है' इत्यादि. सच तो यह है कि हम हिंदी वालों से अपना ही खेत नहीं संभाला जा रहा है. एक-दो वाक्यों में हिंदी जानने वाले को रोजगार में प्राथमिकता देने की बात कह दी जाती है. प्राथमिकता बाध्यता नहीं है और भाषा के मामले में किसी भी लोकतांत्रिक देश में बाध्यता हो नहीं सकती. परिणाम यह कि दिशाहीनता और अनिश्चितता की स्थिति बनी रहती है. हम एक-दूसरे को दोष देने के लिए तत्पर रहते हैं. तो क्यों न हिंदी दिवस-सप्ताह-पखवाड़ा-मास में हम हिंदी वाले ही कुछ

सम्पादकीय

तेजस टूडे

राष्ट्र की आत्मा है हिन्दी

[illegible]

हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने का आ गया समय : शाह

जागरण न्यूज, नई दिल्ली

हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। यह संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के साथ ही 10 से अधिक देशों की द्वितीय भाषा बन चुकी है। 'हिंदी शब्द सिंधु' शब्दकोष तैयार किया जा रहा है। अगले पांच साल में यह दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोष होगा। इस अवसर शाह ने भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया। कहा कि आने वाले समय में यह सभी भारतीय भाषाओं की सुरक्षा का केंद्र बनेगा।

शाह ने साफ किया कि हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी प्रतिस्पर्धा नहीं हो सकती। वे एक-दूसरे की पूरक हैं। नई शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की मोदी सरकार की नीति का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि जो देश अपनी भाषाओं की रक्षा नहीं कर पाते, वो अपने इतिहास, साहित्य और संस्कार से कट जाते हैं। मातृभाषाओं को राष्ट्रीय सुरक्षा की अहम कड़ी बताते हुए कहा कि जिस दिन हम अपनी भाषाओं को गंवा देंगे, उस दिन देश की एकता खतरे में पड़ जाएगी।

भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ करते हुए शाह ने कहा कि यह विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करने का काम करेगा। इसके तहत हिंदी के किसी भी लेख, भाषण या पत्र का भावानुवाद देश की सभी भाषाओं में किया जाएगा और इसी प्रकार देश की सभी भाषाओं के साहित्य, लेख और भाषणों का अनुवाद हिंदी में होगा। 'हिंदी शब्द सिंधु' शब्दकोष में सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को समाहित किया जा रहा है। स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने की नीति का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड में मेडिकल शिक्षा का संपूर्ण पाठ्यक्रम हिंदी में तैयार कर लिया गया है। इसी तरह से भारत की 13 भाषाओं में इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी है। उन्होंने भरोसा जताया कि आने वाले दिनों में हिंदी अनुसंधान की भी भाषा होगी।

राजभाषा की हीरक जयंती के अवसर पर अमित शाह ने स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का भी लोकार्पण किया। इस अवसर उन्होंने राजभाषा गौरव और राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्रदान किए।

- कहा, हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं
- मातृभाषाएं होती हैं राष्ट्रीय सुरक्षा की अहम कड़ी

"भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। यह जड़ नहीं हो सकती। जिस तरह जीवन में चेतना होती है, उसी तरह भाषा में भी होती है। कभी-कभी मैं सोचता हूं कि अगर मुझे हिंदी भाषा समझ में नहीं आती तो मैं लोगों तक कैसे पहुंच पाता या उनसे कैसे जुड़ पाता? मैं व्यक्तिगत रूप से हिंदी भाषा की ताकत को जानता हूं।"
-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

नई दिल्ली में शनिवार को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा की हीरक जयंती वर्ष पर स्मारक डाक टिकट जारी करते केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह। एएनआइ

गृह मंत्री ने कहा, हिंदी शब्दकोश को विश्व का सबसे बड़ा शब्दकोष बनाना हमारा लक्ष्य

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं एक-दूसरे की पूरकः अमित शाह

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि हमने शब्द सिंधु शब्दकोष में भारत की हर भाषा के शब्दों को समाहित किया है। उन्होंने कहा, राजभाषा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच कभी कोई प्रतिस्पर्धा नहीं हो सकती, क्योंकि वे सखियां हैं। वे एक-दूसरे की पूरक हैं।

उन्होंने विश्वास जताया कि अगले लोकसभा चुनावों से पहले सिंधु शब्दकोष विश्व का सबसे बड़ा शब्दकोष बन जाएगा। शाह ने राजभाषा हीरक जयंती समारोह और चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि हमें हिंदी को स्वीकार्य, लचीली और बोलचाल की भाषा बनाना चाहिए। उन्होंने राजभाषा हीरक जयंती के मौके पर विशेष रूप से तैयार किए गए 'राजभाषा भारती' पत्रिका के हीरक जयंती विशेषांक का लोकार्पण किया। स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का भी लोकार्पण किया। उन्होंने राजभाषा गौरव तथा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्रदान किए। गृह मंत्री ने भारतीय भाषा अनुभाग का भी शुभारंभ किया।

नई दिल्ली में शनिवार को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में 'राजभाषा भारती' पत्रिका के हीरक जयंती विशेषांक का विमोचन करते केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह और मंत्री नित्यानंद राय। • प्रेट

हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी स्पर्धा नहीं

शाह ने कहा कि हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी स्पर्धा नहीं हो सकती, क्योंकि हिंदी सभी स्थानीय भाषाओं की सखी है। हिंदी और स्थानीय भाषाएं एक-दूसरे की पूरक हैं। उन्होंने कहा, चाहे डॉ. अंबेडकर हों, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, हिंदी को बढ़ावा देने वाले हमारे नेताओं में अधिकतर गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों से थे।

गृह-सहकारिता मंत्रालय में हिंदी में हो रहा पत्राचार

शाह ने कहा, प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और न्यायपालिका में हिंदी के प्रयोग की दिशा में काम कर रही है। भारत की करीब13 भाषाओं में इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम तैयार होने का काम जारी है। गृह मंत्रालय और सहकारिता मंत्रालय में अब फाइल और पत्र व्यवहार का काम भी हिंदी में होता है।

प्रधानमंत्री ने देशवासियों को शुभकामनाएं दीं

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को हिंदी दिवस पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, सभी देशवासियों को हिन्दी दिवस की बधाई। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया था, जिसके बाद से हर साल इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

श्रम संहिता और श्रमिकों के अधिकार

वैष्णवी सोनकर
सहायक प्रबंधक (विधि)

श्रम सातवीं अनुसूची की समवर्ती सूची में एक विषय है, इसलिये केंद्र और राज्य दोनों को श्रम संबंधी मुद्दों पर कानून बनाने की अनुमति मिलती है। वर्तमान में, केंद्र सरकार के दायरे में 44 और राज्य सरकार के तहत 100 से अधिक श्रम कानून हैं, जो कई श्रम मुद्दों का समाधान करते हैं। दूसरे राष्ट्रीय श्रम आयोग ने केंद्रीय श्रम कानूनों के सरलीकरण, समामेलन और युक्तिकरण की सिफारिश की थी और उसी तर्ज पर निम्नलिखित चार श्रम संहिताओं का मसौदा तैयार किया गया है :–

क) मजदूरी विधेयक, 2019 पर श्रम संहिता
ख) औद्योगिक संबंध विधेयक, 2020 पर श्रम कानून
ग) सामाजिक सुरक्षा और कल्याण पर श्रम संहिता, 2020
घ) व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति पर श्रम संहिता, 2020

मजदूरी विधेयक, 2019

यह उन सभी रोजगार क्षेत्रों में मजदूरी और बोनस भुगतान को विनियमित करने का प्रयास करता है जहां कोई उद्योग, व्यापार, व्यवसाय या विनिर्माण गतिविधि संचालित की जाती है। मजदूरी विधेयक, 2019 पर श्रम कानून की मुख्य विशेषताएँ निम्न है:–

न्यूनतम मजदूरी तय करना : श्रमिकों के जीवन स्तर को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा न्यूनतम मजदूरी तय की जाएगी। केंद्र या राज्य सरकारों द्वारा तय की गई न्यूनतम मजदूरी न्यूनतम मजदूरी से अधिक होनी चाहिए और इसकी केंद्र या राज्य सरकार द्वारा 5 साल से अधिक के अंतराल पर संशोधित और समीक्षा की जाएगी।

ओवरटाइम मजदूरी : एक सामान्य कार्य दिवस से अधिक काम करने वाले कर्मचारी ओवरटाइम मजदूरी के हकदार होंगे, जो मजदूरी की सामान्य दर से कम से कम दोगुना होना चाहिए। किसी कर्मचारी की वेतन कटौती (कुछ आधारों पर जैसे जुर्माना, ड्यूटी से अनुपस्थिति आदि) कर्मचारी के कुल वेतन के 50 % से अधिक नहीं होनी चाहिए।

बोनस का निर्धारण : सभी कर्मचारी जिनका वेतन केंद्र या राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित एक विशिष्ट मासिक राशि से अधिक नहीं है,

वे वार्षिक बोनस के हकदार होंगे जो उनके वेतन का कम से कम 8.33% या 100 रुपये जो भी अधिक हो, होगी। एक कर्मचारी अपने वार्षिक वेतन का अधिकतम 20% बोनस प्राप्त कर सकता है।

लैंगिक भेदभाव का निषेध : समान कार्य या समान प्रकृति के कार्य के लिए वेतन और कर्मचारियों की भर्ती से संबंधित मामलों में लैंगिक भेदभाव का निषेध किया जाना अनिवार्य है।

औद्योगिक संबंधों पर संहिता, 2020

यह संहिता तीन पूर्ववर्ती कानूनों ट्रेड यूनियन अधिनियम 1926, औद्योगिक रोजगार अधिनियम, 1946 और औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की विशेषता को जोड़ता है। औद्योगिक संबंध संहिता की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं :

कार्यकर्ता की परिभाषा : यह एक कार्यकर्ता को किसी भी व्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है जो किराये या पुरस्कार के लिए काम करता है। इसमें प्रबंधकीय या प्रशासनिक क्षमता में या पर्यवेक्षी क्षमता में कार्यरत व्यक्तियों को शामिल नहीं किया गया है, जिनका वेतन 18000 रुपये से अधिक है।

वार्ता संघ और परिषद

एकल वार्ता संघ : यदि एक प्रतिष्ठान में काम करने वाले श्रमिकों के एक से अधिक पंजीकृत ट्रेड यूनियन हैं, तो 51% से अधिक श्रमिकों वाले ट्रेड यूनियन को एकमात्र वार्ता संघ के रूप में मान्यता दी जाएगी।

वार्ता परिषद : यदि कोई ट्रेड यूनियन एकमात्र वार्ता संघ के रूप में योग्य नहीं है, तो यूनियनों के प्रतिनिधियों से मिलकर एक वार्ता परिषद का गठन किया जाएगा, जिसमें सदस्यों के रूप में कम से कम 20% कार्यकर्ता होंगे।

री–स्किलिंग फंड : इस फंड का उपयोग उन कामगारों को फिर से स्किल करने के लिए किया जाना चाहिए जिन्हें नौकरी से निकाल दिया गया है।

सामाजिक सुरक्षा पर संहिता, 2020

इस श्रम कानून ने सामाजिक सुरक्षा से संबंधित नौ कानूनों को बदल दिया। इनमें कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम, 1952, मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 और असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008 शामिल हैं। सामाजिक सुरक्षा पर संहिता के प्रमुख प्रावधान निम्न हैं :

प्रयोज्यता : यह संहिता किसी भी प्रतिष्ठान (आकार–सीमा के अधीन जैसा कि केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित किया जा सकता है) पर लागू होता है।

सामाजिक सुरक्षा कोष : संहिता में कहा गया है कि केंद्र सरकार असंगठित कामगारों, गिग वर्कर्स और प्लेटफॉर्म वर्कर्स के लिए सामाजिक सुरक्षा कोष बनाएगी। इसके अलावा, केंद्र सरकार संगठित श्रमिकों के लिए अलग से सामाजिक सुरक्षा कोष की स्थापना और इसका प्रशासन भी करेगी।

पंजीकरण के प्रावधान : सभी तीन श्रेणियों के श्रमिकों, यानी असंगठित श्रमिकों, श्रमिकों और मंच श्रमिकों को पंजीकरण संख्या देना अनिवार्य है।

राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा बोर्ड : उपरोक्त 3 श्रेणियों के श्रमिकों के कल्याण के उद्देश्य से और उनके लिए योजनाओं की सिफारिश और निगरानी करना इस बोर्ड का दायित्व होगा।

योजनाओं के लिए योगदान : गिग वर्कर्स और प्लेटफॉर्म वर्कर्स के लिए योजनाओं को केंद्र सरकार, राज्य सरकार और एग्रीगेटर्स के योगदान के संयोजन के माध्यम से वित्त पोषित किया जा सकता है।

व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति पर कानून, 2020

यह स्वास्थ्य, सुरक्षा और काम करने की परिस्थितियों को विनियमित करने वाले 13 मौजूदा अधिनियमों को समेकित करता है। इनमें कारखाना अधिनियम,1948, खान अधिनियम, 1952 और अनुबंध श्रम (विनियमन और उन्मूलन) अधिनियम, 1970 शामिल हैं। व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति पर कोड की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं:

फैक्ट्री : यह एक कारखाने को किसी भी परिसर के रूप में परिभाषित करता है जहाँ निर्माण प्रक्रिया की जाती है और यह (i) 20 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देता है यदि यह प्रक्रिया श्रम का उपयोग करके की जाती है (ii) 40 श्रमिक यदि इसे श्रम का उपयोग किए बिना किया जाता है।

खतरनाक गतिविधि में लगे प्रतिष्ठान : इसमें वे सभी प्रतिष्ठान शामिल हैं जहां कोई भी खतरनाक गतिविधि संचालित की जाती है, भले ही श्रमिकों की संख्या कुछ भी हो।

ठेका श्रमिक : 50 या अधिक श्रमिकों (पिछले एक वर्ष में किसी भी दिन) को नियोजित करने वाले प्रतिष्ठानों या ठेकेदारों (केंद्र और राज्य सरकारों के कार्यालयों सहित) पर संहिता लागू होगी और मुख्य गतिविधियों में ठेका श्रमिकों को प्रतिबंधित करेगी (उपयुक्त सरकार द्वारा निर्धारित किया जाएगा)। यह गैर–मुख्य गतिविधियों की एक सूची को भी परिभाषित करता है जिसमें 11 कार्य शामिल हैं जैसे (i) स्वच्छता कार्यकर्ता (ii) सुरक्षा सेवाएं और (iii) रुक–रुक कर होने वाली कोई भी गतिविधि आदि।

निष्कर्ष

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण यह देखता है कि गैर–कृषि क्षेत्र में 71% नियमित वेतन/वेतनभोगी श्रमिकों के पास लिखित अनुबंध नहीं था और 50% सामाजिक सुरक्षा कवर के बिना थे। अनुपालन को सरल बनाने के नए कानूनों से कार्यबल औपचारिकता के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

नई श्रम संहिता बढ़ते कार्यबल को पूरा करने और उनकी बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये अच्छी गुणवत्ता वाले रोजगार पैदा करने की गति बढ़ाने तथा कृषि से श्रम के प्रवास को दूर करने में मदद करेगी। इस प्रकार भारत पूरी तरह से अपने निहित श्रम तथा कौशल लागत को भुनाने में सक्षम हो सकता है और विशेष रूप से कोविड –19 के बाद तेजी से आर्थिक सुधार कर सकता है।

मातृभाषा

जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई-अड्डे की ओर

ओ मेरी भाषा,
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते-रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा.!

केदारनाथ सिंह •

जब हम अपने पैरों की धूल से भी अधिक नम्र बन जाते है, तब ईश्वर हमारी मदद करता है। – महात्मा गाँधी

भारत में वित्तीय साक्षरता

गोविन्द कुमार
वरि0 तकनीशियन

भारत में केवल 17% किशोर ही वित्तीय रुप से साक्षर है। भारत में समग्र वित्तीय साक्षरता की बात करें तो इतनी बड़ी आबादी में हम केवल 27% है। वित्तीय ज्ञान और जागरूकता की कमी के कारण अधिकांश भारतीयों को कई वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की बीमा कंपनियों में पॉलिसीधारकों की कुल लावारिस राशि दिसंबर 2020 तक के अंत में 24,586 करोड़ रुपये थी। इस लावारिस धन का मुख्य कारण नामांकित व्यक्तियों की कमी, पॉलिसी खरीदते समय पूर्ण विवरण प्रस्तुत न करना इत्यादि हैं।

आपके बच्चों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह इस तरह की गलतियाँ न करें और आर्थिक रुप से स्थिर और स्वस्थ जीवन जिएँ।

भारतीय घरों में वित्त सबसे कम चर्चा वाला विषय है

हम सभी लोग अपने घरों में पैसे कमाने के तरीके के बारे में ज्यादा बात करते हैं लेकिन हम कभी इस बारे में बात नहीं करते कि इसे कैसे मैनेज किया जाए। हम कभी भी आपातकालीन निधियों के लिए बचत, कम उम्र में निवेश, रिटायरमेंट प्लानिंग आदि के महत्व को नहीं समझते। इससे हम अपने जीवन में वित्त एवं निवेश से जुड़े गलत फैसले ले लेते हैं।

उदाहरण के लिए जब हम आखिरकार कमाना शुरु करते हैं तो पहली सैलरी से ही आई–फोन खरीदने के बजाय निवेश शुरु करना जरुरी है। आई–फोन खरीदना तभी जरूरी है, जब आप पैसा ज्यादा कमा रहे हों।

निवेश के बारे में गलत धारणाएँ

निवेश के बारे में कई गलत धारणाएं है, जिन पर हम दृढ़ता से विश्वास करते हैं। जैसे कि यह एक जुआ है। इसके लिए बहुत अधिक निवेश और गहन ज्ञान की आवश्यकता होती

है। निवेश का मतलब केवल शेयर मार्केट नहीं है और यह सूची आगे भी जारी रह सकती है। ये निवेश मिथक वित्तीय निरक्षरता का परिणाम है जो आपकी वित्तीय स्थिरता में बाधा के रूप में कार्य करते है। हम संपत्ति के बजाए देनदारियाँ खरीदते है। चीजों को अलग– अलग तरीके से देखने के दो पहलू हैः– उदाहरण के लिए, जब आप एक कार खरीदते हैं तो आप या तो जब चाहे इसका इस्तेमाल कर सकते हैं और जब आपको इसकी जरुरत नहीं होती तो आपकी कार घर में खड़ी रहेगी जो घर का एक बड़ा हिस्सा घेर लेगी, जिससे उसका मूल्यह्रास होगा।

इसका दूसरा तरीका है कि अब आप अपनी कार का उपयोग नहीं कर रहे हैं तो आप उसे अन्य लोगों को किराए पर दे सकते है जिन्हें इसकी जरूरत है। जिससे आपको अपने रख–रखाव के खर्च को वसूलने में मदद मिलेगी। इससे आपके लिए निष्क्रिय आय का सृजन होगा। लेकिन, भारत में हम आम तौर पर दूसरे विकल्प के बजायें पहले विकल्प को चुनना पसंद करते हैं क्योंकि यह हमारे समाज में फिट बैठता है। लेकिन, जब हम अपने जीवन जीने के तरीके बदलते हैं तो दूसरे भी बदल जाते हैं। आप बदलाव करने वाले पहले व्यक्ति बन सकते हैं। भारत में वित्तीय साक्षरता दर दुनिया में सबसे कम होने के ये सभी कारण हैं। इसे कम किया जा सकता है यदि हम आज इन चीजों पर काम करना शुरू कर दें। हम अपने बच्चों के साथ पैसे के बारे में बात करना शुरू कर सकते हैं। हमारे दिमाग में निवेश के बारे में जो मिथक हैं, उन्हें दूर करने की कोशिश कर सकते हैं और अंत में देनदारियों को खरीदने के बजाय अपने पैसे से संपति खरीदना शुरु कर सकते हैं।

साहित्यकारों की कलम से.....

झूठ के अनेक रूप हैं, परन्तु सत्य का हमेशा एक ही रुप होता है। – रूसो

प्रकृति से सीखें

हेमा
उप महाप्रबंधक (वि.एवं ले.)

व्यक्तित्व से लेकर हमारी उपलब्धियों तक की तुलना पशु–पक्षियों से की जाती है। हिम्मती और साहसी व्यक्ति को शेर–दिल कहा जाता है। जिसके लिए इस शब्द का प्रयोग होता है, उसे अच्छा भी लगता है। हालांकि किसी को भेड़िया, लोमड़ी, सूअर, बिल्ली, बैल, कुत्ता और गधा आदि कहा जाये तो ना सिर्फ बुरा लगता है, बल्कि हो सकता है कि मारपीट की नौबत आ जाये। हौसलों की उड़ान की बात करते समय पक्षियों की तरह अनंत आकाश में उड़ने की प्रेरणा दी जाती है। सुंदर आँखों के लिए मृगनयनी, सधी हुई चाल के लिए हंस–चाल की संज्ञा दी जाती है। "काग–चेष्टा, बको ध्यानम, श्वान निंद्रा तथैव च, अल्पाहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पाँच लक्षणम " श्लोक में सारे पशु पक्षियों से ही प्रेरणा के सूत्र जुड़े हुए हैं। जिस तरह से सृष्टि में पशु–पक्षियों के गुण–अवगुण पर इतना गहरा ध्यान दिया गया है, वैसे ही वक्त आने पर इन पशु–पक्षियों की तरह सच में जीने की आदत डाल ली जाये तो कई उलझनों, कई समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। लोग इस बात से दुखी होते हैं कि किसी ने उनके साथ विश्वासघात कर दिया। स्वाभाविक है कि जहाँ विश्वास होगा, वहीं घात –आघात किया जा सकेगा।

इस संबंध में कथाकार सुदर्शन की कहानी "हार की जीत का" उल्लेख प्रासंगिक होगा। खड्ग सिंह नामक डाकू को बाबा भारती के घोड़े सुल्तान को देखकर लालच आ गया। किस प्रकार घोड़ा हासिल हो, इसके लिए खड्ग सिंह ने योजना बनाई और सड़क किनारे अपाहिज बनकर बैठ गया। बाबा भारती घोड़े पर सवार होकर जा रहे थे। उन्होंने खड्ग सिंह को सहारा दिया । कुछ दूर जाने के बाद खड्ग सिंह ने बाबा भारती को धक्का दे दिया। बाबा भारती गिर पड़े और खड्ग सिंह घोड़ा लेकर भागने लगा। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह थी कि भागते हुए खड्ग सिंह से बाबा भारती ने कहा – "यह सब बात किसी से न कहना खड्ग सिंह, वरना अपाहिजों पर से लोगों का विश्वास खत्म हो जाएगा।'' इस प्रसंग का मुख्य और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जिस ''घोड़े'' सुलतान को बाबा भारती बच्चे की तरह पालते थे, वह घोड़ा उनके हाथ से निकल गया तो भी वह मायूस होकर विलाप नहीं

इस प्रसंग का मुख्य और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जिस ''घोड़े'' सुलतान को बाबा भारती बच्चे की तरह पालते थे, वह घोड़ा उनके हाथ से निकल गया तो भी वह मायूस होकर विलाप नहीं करने लगे। किसी भी विपरीत परिस्थिति के लिए विलाप या पश्चताप करने से कुछ हासिल तो नहीं होता बल्कि ऊर्जा का क्षरण अवश्य होता है। पशु–पक्षियों से सबक और सीख लेने से लाभ यह है कि पशु–पक्षी आपस में बदला नहीं लेते। किसी एक पशु–पक्षी का हिस्सा दूसरे ने झपट्टा मारकर खा लिया तो वह मायूस और डिप्रेस नहीं होता। यहाँ मुख्य बात यह है कि पशु–पक्षियों से सीख लेने का मतलब पशु–पक्षी बन जाना नहीं, बल्कि उनकी बिंदास रहने की आदतें अपनाना है।

संसार है तो इसमें छीना–झपटी और मारकाट तो रहेगी ही। हर युग में विश्वासघात, धोखा, कपट, अनाचार रहा है, पर जो इससे ऊपर उठ गया, समय उसकी बंदगी करता है और उसका यशोगान सदियों तक होता रहता है। अतः मनुष्य को चाहिए की वह बीते कल को भुला कर आज में जिये और जीवन के हर पल का आनंद ले।

❀❀❀

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी रूप में जारी किये जाने वाले कागजात.....

* सामान्य आदेश	* टेंडर फॉर्म
* अधिसूचनाएँ	* नोटिस
* प्रेस विज्ञप्ति	* संकल्प
* संविदा	* नियम
* करार	* परिपत्र
* लाइसेंस	* प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट
* परमिट	* संसद में रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागजात

देवी स्थान के शिखर पर महादेवी

वही धूप है, वही पहाड़ी बादल,
वही जंगल की वनैली, सरसराती हवा;
सिर्फ वे आँखें नहीं हैं,
जो कभी डेस्क से उठकर
खिड़की के पार उन्हें टोका करती थीं

- निर्मल वर्मा

रामगढ़ का वह घर, जो धीरे-धीरे समय के साथ एक तपोवनी आश्रम में बदलता गया। हिन्दी के अनेक कवि और साहित्यकार – इलाचन्द्र जोशी, सुमित्रानन्दन पन्त, धर्मवीर भारती समय-समय पर वहाँ आकर रुकते थे। कहते हैं, स्वयं महादेवीजी ने अपने कविता-संग्रह दीपशिखा की रचना इसी भवन में रहकर की थी।

महादेवीजी की मृत्यु के बाद – जैसा अक्सर हमारे देश में स्मृति स्थलों के साथ होता है-यह भवन जर्जर, उपेक्षित अवस्था में पड़ा रहा। सौभाग्य से श्री बटरोही कुछ संवेदनशील कुमाऊँनी प्राध्यापकों और लेखकों ने नैनीताल के जिलाधिकारियों के सहयोग से इस भवन को महादेवी साहित्य संग्रहालय में विकसित करने का बीड़ा उठाया। संग्रहालय के उद्घाटन केअवसर पर जो सन् 1996 में हुआ था मुझे श्री अशोक वाजपेयी के साथ पहली बार वहाँ जाने का संयोग मिला। रामगढ़ के जिन सेब-बगीचों को मैं सिर्फ बस की खिड़की से लालायित आँखों से देखता था, वहाँ पहली बार कभी महादेवीजी के निमित्त ठहरने का मौका मिलेगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

एक सँकरी-सी चढ़ाई उस संग्रहालय तक जाती है, जहाँ कभी महादेवीजी धीरे-धीरे चलते हुए अपने घर जाती थीं। तब क्या वह अनुमान लगा सकती थीं कि वर्षों बाद उनके पाठकों प्रशंसकों की लम्बी कतार उनके पदचिह्नों पर चलते हुए एक ऐसी ऊँचाई पर पहुँचेगी, जहाँ वह तो कहीं पहाड़ों के पीछे लुप्त हो जाएँगी, किन्तु अपने पीछे आनेवालों के लिए अपने कतिपय स्मृति- अवशेष छोड़ जाएँगी। कुछ किताबें, जो अलमारी के भीतर एक-दूसरे से सटी, धूल में सनी दिखाई दे जाती हैं। चौके में चूल्हा, उन दिनों के कुछ पुराने बरतन, लकड़ी का पटरा – वही सादी स्वच्छ-सात्त्विक-सी घरेलू चीजें, जिनसे उनकी छोटी-सी गृहस्थी चलती थी। उनके अध्ययन कक्ष में एक आसन और डेस्क दिखाई दिए, जहाँ वह अधिकांश समय, एकान्त की घड़ियों में, लिखने, पढ़ने, सोचने में गुजारती थीं। वहीं शायद चित्र भी बनाती थीं। शायद यही कारण था कि भवन में उनके बनाए जो चित्र सुरक्षित हैं, वे अधिकांश लैंडस्केप हैं, सूर्यास्त की कोमल रोशनी, पहाड़ों पर झरता आलोक, पेड़ों के झुरमुट से खेलती हुई धूप, हवा, छाया।

वही धूप है, वही पहाड़ी बादल, वही जंगल की वनैली, सरसराती हवा; सिर्फ वे आँखें नहीं हैं, जो कभी डेस्क से उठकर खिड़की के पार उन्हें टोका करती थीं।महादेवीजी के डेस्क और आसन को देखकर मुझे वाराणसी के घाट पर बसा एक अन्य आश्रम याद आ गया।।।बहुत वर्षों से उसे देखने की उत्कट साध थी, जहाँ आनन्दमयी माँ वर्ष के कुछ महीने रहा करती थीं। मेरी बड़ी बहन आनन्दमयी माँ की अर्पित आराधिका थीं और बचपन में उन्हीं के साथ उन्हें देखने-सुनने जाया करता था। आज मुझे कुछ और नहीं, उनके सुन्दर, सात्त्विक चेहरे पर खेलती मुस्कराहट याद रह गई है।।। बिलकुल वैसी ही जैसी मैंने पहली बार और आखिरी बार महादेवीजी के चेहरे पर देखी थी।

यह भी क्या देवी संयोग था कि महादेवीजी के अध्ययन कक्ष में जाकर ही मुझे आनन्दमयी माँ का वाराणसीवाला साधना-कक्ष याद आता रहा; वह भी खिड़की के पास बैठा करती थीं, जिसके पार धूप में चमकता गंगा का असीम, निस्पन्द विस्तार दिखाई देता था। दोनों स्थानों के बीच एक दुर्लभ, अलौकिक साम्य था- हिमालय की पावन धवल अटलता और गंगा की सतत प्रवाहमयता।।।और तब महादेवीजी की चौकी के पास बैठा हुआ मैं सोचने लगा कि दोनों के बीच भौगोलिक दूरी के बावजूद कितना गहन सान्निध्य था ! महादेवी शब्द की पवित्रता में सृष्टि को साकार करती थीं, आनन्दमयी माँ सृष्टि की पवित्रता में ईश्वर से साक्षात् करती थीं। खिड़की से ये दृश्य भले ही अलग-अलग दिखाई देते हों, कवि और साधक में कोई अलगाव नहीं था। दोनों ही द्रष्टा थे।

यह भी एक विचित्र संयोग ही रहा होगा कि महादेवी ने अपने लिए जो निवास स्थान चुना था, उससे लगभग तीन किलोमीटर दूर सबसे ऊँची पहाड़ी पर कभी कवीन्द्र रवीन्द्र रहा करते थे। वह सन् 1903 में अपनी बीमार बेटी के स्वास्थ्य लाभ के लिए यहाँ आए थे। उन्होंने अपनी कुटी का नाम गीतांजलि रखा था, जिसकी कुछ कविताएँ उन्होंने यहाँ लिखी थीं। आज उनके घर के नाम पर सिर्फ पत्थरों के दूह दिखाई देते हैं। कितना अजीब है, जिस कृति के नाम पर रवीन्द्रनाथ को विश्व – ख्याति मिली, उसी के नाम का आवास-स्थल आज खंडहरों में दिखाई देता है।

महादेवी निर्मल वर्मा की नजर से
(सर्जना पथ के सहयात्री कुछ अंश)

पूर्ण भरोसा

जयराम मीना
पर्यवेक्षक

एक व्यक्ति की नई –नई शादी हुई और वो अपनी पत्नी के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में वो दोनों एक बडी झील को नाव के द्वारा पार कर रहे थे, तभी अचानक एक भयंकर तूफान आ गया । वो आदमी साहसी था लेकिन औरत बहुत डरी हुई थी क्योंकि हालात बहुत खराब थे। नाव बहुत छोटी थी और तूफान वास्तव में भयंकर था। दोनों किसी भी समय डूब सकते थे।

ऐसी स्थिति में भी वह आदमी चुपचाप, निश्चल और शान्त बैठा था जैसे कि कुछ नहीं होने वाला। औरत डर के मारे काँप रही थी। वो बोली ''क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा, ये हमारे जीवन का आखिरी क्षण हो सकता है, ऐसा नहीं लगता कि हम दूसरे किनारे पर कभी पहुंच भी पायेंगे। अब तो कोई चमत्कार ही हमें बचा सकता है वर्ना हमारी मौत निश्चित है ।''

महिला ने पुनः कहा ''क्या तुम्हें बिल्कुल डर नहीं लग रहा ? कहीं तुम पागल – वागल या पत्थर– वत्थर तो नहीं हो ?''इस पर वो आदमी खूब हँसा और एकाएक उसने म्यान से तलवार निकाल ली। औरत अब और परेशान हो गई कि न जाने वो व्यक्ति वो क्या कर रहा था। तब वह नंगी तलवार को अपनी पत्नी की गर्दन के पास ले आया, इतना पास कि उसकी गर्दन और तलवार के बीच बिल्कुल कम फर्क बचा था, अब तलवार लगभग उसकी गर्दन को छू रही थी । वह अपनी पत्नी से बोला ''क्या तुम्हें डर लग रहा है ?''

इस पर उसकी पत्नी खूब हँसी और बोली ''जब तलवार तुम्हारे हाथ में है तो मुझे क्या डर, मैं जानती हूं कि तुम मुझे बहुत प्यार करते हो''। व्यक्ति ने तलवार वापस म्यान में डाल दी और बोला ''यही मेरा जवाब है। मैं जानता हूँ कि भगवान मुझे बहुत प्यार करते हैं और ये तूफान उनके हाथ में है, इसलिए जो भी होगा अच्छा ही होगा। अगर हम बच गये तो भी अच्छा और नहीं बचे तो भी अच्छा। क्योंकि सब कुछ उस परमात्मा के हाथ में है और वो कभी कुछ भी गलत नहीं कर सकते । वो जो भी करेंगे हमारे भले के लिए करेंगे। इसलिए हमेशा विश्वास बनाये रखो।''

व्यक्ति को हमेशा उस परमपिता परमात्मा पर विश्वास रखना चाहिये जो हमारे पूरे जीवन को बदल सकता है।

क्रोध को प्यार से, बुराई को अच्छाई से, स्वार्थी को उदारता से और झूठे व्यक्ति को सच्चाई से जीता जा सकता है।– गौतम बुद्ध

सिक्कों की कहानी, अनुज की जुबानी

अनुज कुमार
संचालक

सिक्का, जो पुरातन काल से ही लोक प्रचलन का अभिन्न अंग रहा है। मुगल काल, राजा रजवाड़ों के काल से लेकर आज तक सिक्कों की खनक मौजूद है। सिक्का बालपन की यादों का झरोखा है, विकसित भारत की निशानी है। इसी सिक्के ने लिखी हर वक्त एक नई कहानी है। आपने अपने आसपास कई ऐसे लोगों को देखा होगा, जिनके पास नए और पुराने सिक्कों का ढेर सारा संग्रह होगा। दरअसल, कुछ लोगों को सिक्के जमा करने का शौक होता है। सिक्कों का इतिहास शताब्दियों पुराना है और इसकी उत्पत्ति 'रुपया' शब्द से हुई है जो संस्कृत के 'रूप्यकम्' से बना है। जिसका मतलब होता है – चांदी का सिक्का। भारतीय मुद्रा को रुपया नाम शेरशाह सूरी ने दिया था। उसने 1540–45 में चांदी के सिक्के जारी किए थे। उस समय 10 ग्राम चांदी से बना सिक्का ही रुपया कहलाता था।

चांदी का सिक्का

शेरशाह सूरी ने चांदी का जो सिक्का जारी किया, वह मुगलकाल, मराठा साम्राज्य और ब्रिटिश भारत में भी चलता रहा। इसके अलावा शेरशाह सूरी ने ताम्बे और सोने के सिक्के भी चलाए।

देश में किस जगह पर सिक्के बनते हैं

वर्ष 1935 में स्थापित भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.), के अनुसार भारत में चार जगहों पर स्थित टकसालों में सिक्के ढाले जाते हैं जो मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद और नोएडा में हैं।

इतना ही नहीं, सिक्कों पर बने निशान को देखकर यह भी पता लगाया जा सकता है कि यह सिक्का कहाँ बना है। हर सिक्के पर उसके ढालने का साल लिखा होता है। सिक्कों पर लिखे वर्ष के नीचे एक निशान होता है, जिससे पता चलता है कि सिक्का किस टकसाल में ढाला गया है। अगर किसी सिक्के पर तारा (स्टार) बना है तो इसका मतलब है कि उसे हैदराबाद में ढाला गया है जबकि नोएडा में ढाले गए सिक्कों पर एक ठोस बिंदू होता है।

इसके अलावा, मुंबई में ढाले गए सिक्कों पर निशान की आकृति हीरे जैसी होती है, जबकि कोलकाता में ढाले गए सिक्कों पर ऐसा कोई भी निशान नहीं होता।

भारत में सिक्के, सिक्का अधिनियम 1906 के तहत ढाले जाते हैं। इस अधिनियम के तहत भारत सरकार द्वारा सिक्कों के उत्पादन और आपूर्ति की जिम्मेदारी आर. बी.आई. कोदी गई है। भारत सरकार समय–समय पर धातुओं के मूल्य के आधार पर अलग–अलग धातुओं का इस्तेमाल करती है। वर्तमान में, अधिकांश सिक्कों के निर्माण के लिए 'फेरिटिक स्टेनलैस स्टील' (17 प्रतिशत क्रोमियम और 83 प्रतिशत लोहा) का इस्तेमाल किया जा रहा है।

लैटिन शब्द

1.	Ab initio	- आरंभ से	13.	Ex gratia	- अनुग्रह पूर्वक
2.	Above par	- अधिमूल्य पर	14.	Ex officio	- पदेन
3.	Actus reus	- आपराधिक कार्य	15.	Fait accompli	- संपन्न कार्य
4.	At par	- सममूल्य पर	16.	Habeas corpus	- बंदी प्रत्यक्षीकरण
5.	Bonafide	- वास्तविक	17.	Have Nots	- निर्धन
6.	By and large	- कुल मिलाकर	18.	Inter se	- परस्पर
7	Carte Blanche	- पूर्णाधिकार	19.	Inter alia	- अन्य बातों के साथ-साथ
8.	Coup D'etat	- शासन परिवर्तन	20.	Ipso facto	- इसी बात से
9.	De Jure	- विधित:	21.	In toto	- संपूर्ण
10.	De novo	- नए सिर से	22.	Lingua Franca	- जनभाषा
11.	De facto	- असल में	23.	Locus Standi	- सुने जाने के अधिकार
12.	En block	- सामूहिक रूप से	24.	Manifest	- मालसूची

चल पड़ा शहर की दुनिया में मैं

नीरज झा
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

चल पड़ा शहर की दुनिया में मैं,
सुकूँ गाँव में छूट गया,
जहाँ बीता बचपन गलियों में,
वह जहाँ भी हमसे रूठ गया।

थी चाह की मंजिल यहीं मिले,
था कहाँ पता बस चाह थी वो,
थे शोभा हम जिस आंगन के,
वो आँगन भी अब तो टूट गया।

माना आया बदलाव बड़ा,
इस भौतिकता की दुनिया में,
है आस कि मन में काश मिले,
वो खास जो हमको भूल गया।

है वक्त तरक्की का माना,
आवश्यकता जननी विज्ञान की,
पर वो बोल सुहाने क्या कहिए,
जिन्हें बजा लड़कपन झूम गया।

है वक्त गुजरता रोज यहाँ,
राही हम केवल मंजिल के,
जब कभी मिले कहीं पर वो
शहर जो अब तक दूर रहा ॥

हितेश तँवर
प्रबंधक (तक.)

बोलने का सही समय

हम सदियों से सुनते आ रहे हैं कि सही समय पर सही शब्दों का प्रयोग करने से संबंध प्रगाढ़ होते हैं। संबंधो में शब्दों का अत्याधिक महत्व होता है। मार्क ट्वेन कहते हैं, ''अचूक शब्दों का प्रभाव पड़ता ही है, किंतु योग्य समय पर मौन धारण करना उससे भी अधिक प्रभावशाली होता है।''

गलत समय पर प्रयोग किया हुआ अचूक शब्द अथवा अचूक समय पर प्रयोग किया हुआ गलत शब्द, दोंनो ही उलझन पैदा करते हैं। उचित समय पर उचित शब्द का प्रयोग करने से प्रोत्साहन मिलता है।

हम जो बोलते हैं, उसके लिए यदि कभी हमें पश्चाताप होता हो, तो मुंह खोलने के पहले एक क्षण के लिए रूकें और स्वयं से पूछें कि जो कुछ भी मैं कहने वाला हूं क्या वह सामने वाले व्यक्ति के लिए सही है या नहीं, क्या इससे हमारे संबंध प्रगाढ़ होंगे? अनेक बार हमनें इसका विचार ही नहीं किया होता है कि हमारे शब्दों से सामने वाले व्यक्ति को कैसा लगेगा।

कभी–कभी जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जिसमें सच बताया जाना बहुत जरूरी होता है। अनेक बार सच बहुत कड़वा होता है, फिर भी उसे प्रेमपूर्वक अच्छे शब्दों में समझाया जाए, तो सामने वाला व्यक्ति उसे ढंग से समझ लेता है।

बोलने से पहले दो बार विचार करें। बढ़ई लोगों का ब्रीद वाक्य होता है, दो बार गिनो, एक बार काटो अर्थात काटने के पहले दो बार गिन लो, यह ब्रीद वाक्य शब्दों के मामले में भी सटीक बैठता है। दो बार विचार करें और एक बार बोलें। अनेक बार ऐसा होता है कि हम जो बताना चाहते हैं, वह सामने वाले व्यक्ति को जल्दी समझ में आ जाए इसलिए उसे कई बार बताना पड़ता है क्योंकि बोलने के पहले उस पर विचार नहीं किया गया होता है।

लोगों से बने हुए संबंध सुधारने के लिए आज से ही एक बात आरंभ करें। बोलने से पहले दो बार विचार करना शुरू करें। कुछ बोलना हो, तो पहले स्वयं से पूछें और फिर बोलें कि क्या यह सामने वाले व्यक्ति के लिए सही है या नहीं। इस प्रकार नपे–तुले शब्दों में और समय की उपयुक्तता के अनुसार बोलकर हम अपने संबंध बिगड़ने से रोक सकते हैं।

आराम करने की कला

जेरोन्टोलॉजी रिसर्च ग्रुप के परीक्षण के हिसाब से अप्रैल 2015 तक मिसाओ ओकावा विश्व की सबसे ज्यादा आयु की महिला के तौर पर जानी जाती थी। जब अस्पताल में उनकी मौत हुई उस वक्त उनकी उम्र 117 वर्ष और 27 दिन थी ।

सन् 1898 में एक टेक्सटाइल व्यापारी के घर में मिसाओ का जन्म हुआ था। इस महिला का जीवन इतना दीर्घ और स्वस्थ था कि उसने अपने जीवन काल में तीन अलग–अलग सदियों में जीवन यापन किया और वह कई ऐतिहासिक घटनाओं की गवाह बनी। 110 की उम्र तक वह अकेली रहती थी । महिला इतनी ज्यादा उम्र में भी स्वस्थ और सक्रिय थी और किसी की मदद के बिना भी अपने सभी काम खुद किया करती थी।

जब लोगों ने उनकी दिनचर्या के दौरान किए जाने वाले कामों के बारे पूछा तो उन्होंने बताया– ''सुशी (जापान का व्यंजन खट्टा चावल) खाना और नींद लेना।'' उनके इस जवाब में हम और एक चीज जोड़ सकते हैं–जीने की उनकी, इच्छाशक्ति । जब उनसे उनकी लंबी आयु का राज पूछा गया तो उन्होंने हँसते हुए जवाब दिया – ''मैं भी वही खोज रही हूँ।''

जापान लंबी आयु वाले लोगों की भूमि है, इस बात के सबूत मिलते हैं। 112 वर्ष और 150 दिन जीने वाले साकारी मामोइ की जब मौत हुई तब वह विश्व के सबसे बुजुर्ग पुरुष थे। लेकिन उस वक्त भी उनसे ज्यादा उम्र वाली 57 महिलाएँ जीवित थीं।

लोग आजकल की व्यस्त जीवनशैली में अपने आपको समय देना भूल सा गए है। इससे जीवन प्रत्याशा कम हो रही है। इसलिए हमें काम करते–करते "आराम करने की कला" भी सीखनी होगी।

साहित्यकारों की कलम से.....

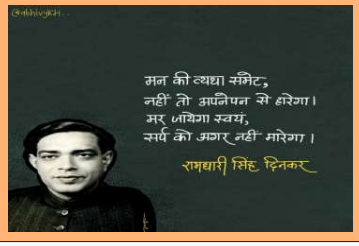

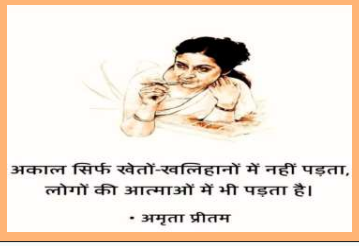

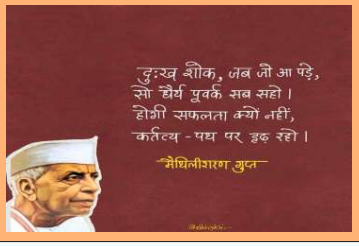

अगर सफल और प्रतिष्ठित बनना है, तो झुकना सीखो, क्यूंकि जो झुकते नहीं, समय की हवा उन्हें झुका देती है।– ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा

हीरा मणि सुयाल
उप प्रबंधक (रा.भा.)

"पत्रकारिता" अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' का अनुवाद है। जिसका तात्पर्य होता है, दिन–प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य। पुराने समय में सरकारी कार्यों का दैनिक लेखा–जोखा, बैठकों की कार्रवाई और क्रियाकलापों को जर्नल में रखा जाता था, वहीं से पत्रकारिता यानी 'जर्नलिज्म' शब्द का उद्भव हुआ। सबसे पहले पाँचवी तथा छठी शताब्दी में चीन में चीन में लकड़ी के ठप्पों से छपाई का काम शुरू हुआ। भारत में भी छपाई का काम भी लगभग इसी दौरान आरंभ हो गया था। एक समय में किताबें लोगों के ज्ञान में अभिवृद्धि का प्रमुख साधन हुआ करती थी लेकिन मुद्रण तकनीक के विकास और कागज के निर्माण से ज्ञान के प्रसार की सम्भावनाएँ बढ़ गई। कागज का आधुनिक रूप फ्रांस के निकोलस लुईस रोबर्ट ने 1778 ई. में बनाया। ब्रिटिश भारत में सबसे पहले अंग्रेजी प्रेस की स्थापना 1674 में बम्बई में हुई थी। इसके बाद 1772 में चेन्नई और 1779 में कलकत्ता में सरकारी छापेखाने की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त, भारत में सर्वप्रथम जेम्स आगस्ट्स हिक्की ने 'बंगाल गजट' के नाम से अखबार निकाल कर पत्रकारिता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल की। भारत में पत्रकारिता की संक्षिप्त विकास यात्रा निम्नवत प्रस्तुत है:–

आदि युग– हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव काल अर्थात् 30 मई 1826 को पं. जुगल किशोर शुक्ल द्वारा 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन आरंभ करने से 1872 तक उसका आदि युग रहा। भारतीय पत्रकारिता के उस आरंभिक युग में पत्रकारिता का उद्देश्य जनमानस में जागरुकता पैदा करना था। इस दौरान 1857 की क्रांति का प्रभाव भी लोगों पर देखने को मिला ।

भारतेन्दु युग– हिन्दी साहित्य के समान ही हिन्दी पत्रकारिता में भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का अपना एक अलग ही स्थान है। भारतेन्दु जी ने 1868 से ही पत्र–पत्रिकाओं के लिए लिखना आरंभ कर दिया था। पत्रकारों के इस युग में पत्रकारिता का उद्देश्य जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत करना था। भारतेन्दु युग 1900 ई. सन् माना जाता है। इस दौरान महिलाओं की समस्याओं पर आधारित बालबोधनी पत्रिका का भी प्रकाशन किया।

मालवीय युग– 1887 में कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह ने मालवीय जी के संपादकत्व में 'हिन्दुस्तान' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन आरंभ किया था। बाद में मालवीय जी ने स्वयं 'अभ्युदय' नामक पत्रिका निकाली। बालमुकुन्द गुप्त, अमृतलाल चक्रवर्ती, गोपाल राम गहमरी आदि उस युग के प्रमुख संपादक थे। 1890 से 1905 तक के राजनैतिक परिवर्तन वाले युग में पत्रकारिता का लक्ष्य भी राजनैतिक समझ को जागृत करना था।

द्विवेदी युग– पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 1903 में सरस्वती का प्रकाशन करने के साथ ही पत्रकारिता को एक नया स्वरूप मिल गया। इस दौरान पत्रकारिता का विस्तार भी तेजी से हुआ। द्विवेदी युग का समय 1905 से 1920 माना जाता है। द्विवेदी युग में देश के कोने–कोने से पत्र–पत्रिकाओं का बड़ी तादाद में प्रकाशन होने लगा।

गांधी युग– मोहनदास करमचन्द गांधी अर्थात महात्मा गांधी का हिन्दी पत्रकारिता में बड़ा योगदान रहा है। गांधी युग 1920 से 1947 तक माना जाता है। इस दौर में स्वतंत्रता आंदोलनों में भी तेजी आई थी। आजादी को प्राप्त करने की होड़ में इन आंदोलनों के साथ पत्रकारिता भी काफी विकसित होने लगी। इन महत्त्वपूर्ण वर्षों में ही हिन्दी और भारतीय पत्रकारिता के मानक निर्धारित हुए। उन वर्षों में ही विश्व पत्रकारिता जगत में भारतीय पत्रकारिता की विशेष पहचान बनी। शिवप्रसाद गुप्त, गणेशशंकर विद्यार्थी, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, माखनलाल चतुर्वेदी, बाबूराम विष्णु पराइकर आदि स्वनामधन्य पत्रकार उसी युग के हैं। कर्मवीर, प्रताप, हरिजन, नवजीवन, इंडियन ओपीनियन आदि दर्जनों पत्र पत्रिकाओं ने उस युग में स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई उर्जा प्रदान की।

आधुनिक युग– स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक के वर्षों की हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा को आधुनिक युग में रखा जाता है। इस युग में पत्रकारिता के विषय क्षेत्र का विस्तार और नए आयामों का उद्‌भव हुआ है। आधुनिक दौर में भाषा और खबरों के चयन में भी काफी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। खासतौर पर अखबारों की खबर पर समाज की आधुनिक सोच का प्रभाव भी पूरी तरह से देखने को मिल रहा है। इतना ही नहीं अखबारों में प्रबंधन और विज्ञापन के बढ़ते प्रभाव का असर भी हो रहा है। हर दिन नए–नए अखबार एक नए स्वरूप में लोगों के सामने आ रहे हैं। खोजी पत्रकारिता का समावेश भी तेजी से अखबारों को अपने चपेटे में ले रहा है। ज्यादातर अखबार इंटरनेट पर भी अपने सारे संस्करण उपलब्ध करा रहे हैं। अन्य किताबों से संकलित करके पिछले कई सालों पुराने समाचार पत्र के विकास को जानने का प्रयास किया है।

समय बदलने के साथ, पत्रकारिता के साधनों में भी बदलाव हुआ है। रेडियो, टीवी अन्य मीडिया साधन इत्यादि का विकास हुआ। हाल के कुछ दशकों में, ग्लोबलाइजेशन के प्रभाव के परिणामस्वरूप मीडिया आउटलेट्स ने अपनी पहुंच का विस्तार किया, डिजिटल उपस्थिति स्थापित की और वे वैश्विक दर्शकों के साथ जुड़ गए हैं। फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने नागरिक पत्रकारिता को जन्म दिया, जहां आम व्यक्ति समाचार रिपोर्टिंग और जानकारी साझा करने में सक्रिय भागीदार बन गए। हालांकि नैतिकता के संदर्भों में समकालीन मीडिया हाउस की पत्रकारिता प्रश्नों के घेरे में रहती है। किन्तु स्वतंत्र पत्रकारों द्वारा काफी हद तक पत्रकारिता के मानदंड बनाये रखे हैं।

सूरज चला शिकार पर, लेकर तीर कमान

लालता प्रसाद कुशवाह
तकनीशियन

सूरज की भौहें चढ़ीं , खाने लगा उबाल ।
समाधान क्या दें भला , उलझे हुए सवाल ।।
कड़ी धूप की देख जिद , कोने दुबकी छाँव ।
अपनी –अपनी आग में जलता सारा गाँव ।।
रेतीली संवेदना , पथरीला संवाद।
कड़ी धूप में हो रहा , मरुथल का अनुवाद ।।
गलत आज फिर हो गया , मौसम का अनुमान ।
क्रूर धूप से जूझते , खेत और खलिहान ।।
अंगारों से जल उठे , गुलमोहर संकेत ।
खौल –खौल कर हो गई , नदी आँख की रेत ।।
नदी बिकी बाजार में , पानी काले कोस ।
प्यासी जनता क्या करे , चाट रही है ओस ।।
आपस में करने लगीं , किरनें क्रूर सलाह ।
बड़े सबेरे हो गया , सूरज तानाशाह ।।
प्यासी है सारी प्रजा , प्यासा है सम्राट ।
अग्निकुंड से हो गए , पानी वाले घाट ।।
गर्म थपेड़े पी रहा , पत्ता –पत्ता जर्द ।
दुपहर अपनी आँख से , पोंछ रही है गर्द ।।
धधक रही सी प्यास में , उबल रही है पीर ।
लपटों की नावें चलें , जले नदी का नीर ।।
हवनकुण्ड से देश में , मुँह फैलाती आग ।
किसे पड़ी है जो यहाँ , छेड़े बादल राग ।।
पानी दिखता ही नहीं , पाया कारावास ।
होठों पर जलने लगी , अंगारों सी प्यास ।।
गर्म टीन सा तप रहा , हर कोमल एहसास ।
पिघला सा डामर पिएं , सड़कें दिखें उदास ।।

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। रवींद्रनाथ टैगोर

नदी किनारे ऊँघती , टीले बैठी शाम ।
पानी में मुँह धो रहा , दिन भर का कुहराम ।।
पूर्व नियोजित सा लगे , नदी नाव संयोग ।
अपने ही षडयंत्र हैं , अपने ही आयोग ।।
कठिन लकीरों से भरा , उसका सरल स्वभाव ।
पत्थर जैसा हो गया , पानी का बर्ताव ।।
गर्म धूल आँखों भरी , कैसे भरता घाव ।
सीधे मुँह क्या कुछ कहे , औंधे मुँह की नाव ।।
सपनों की चिड़िया कटी, जागा हाहाकार ।
पंखे जैसी हो गई, कातिल ये सरकार ।।
नदिया तस्कर ले गए, चल निकला व्यापार ।
पौशाले की जीभ पर , छालों की भरमार ।।
पीने की खातिर बचे , बालू , मिट्टी ,रेत ।
ठीक कुएँ के सामने , पंछी पड़ा अचेत ।।
तड़प रहा है रेत में , अपना जीवन राग ।
पानी पानी में लगी , जैसे कोई आग ।।
टुकड़ा –टुकड़ा हो गया , मौसम का अभिमान ।
जूझ रहा है गुलमुहर , जूझ रहा इंसान ।।
सूरज चला शिकार पर , लेकर तीर कमान ।
लू लपटों से भर गया , दुपहर का सुनसान ।।
सूखे –सूखे होंठ पर, गिरे प्यास की भीत ।
मन बहलाने के लिए , टुल्लू का संगीत ।।
होठों पर काँटे उगे , पथरायी है प्यास ।
कीचड़ होकर रह गया , पानी का इतिहास।।

राजभाषा नियम 1976 का नियम 5

कार्यालय में हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही दिये जाएँ ।

रोटी

हरिओम मीना
वरि. कार्या. सहायक

वह रोटी में नमक की तरह प्रवेश करता है
तवे पर रखी हुई रात की रोटी
उसके आने की खुशी में जरा–सा उछलती है
और एक भूखे आदमी की नींद में गिर पड़ती है
एक बच्चा जगता है
और घने कोहरे में पिता की चाय के लिए दूध खरीदने
नुक्कड़ की दुकान तक अकेला चला जाता है
एक पतीली गर्म होने लगती है
एक चेहरा लाल होना शुरू होता है
एक खूँखार चमक तंबाकू के खेतों से उठती है
और आदमी के खून में टहलने लगती है
मेरा खयाल है वह आसमान से नहीं
किसी जानवर की माँद से निकलता है
और एक लंबी छलाँग के बाद
किसी गंजे तथा मुस्टंड आदमी के भविष्य में
गायब हो जाता है अकेला और शानदार
वह आदमी के सिर उठाने की यातना है
आदमी का बुखार आदमी की कुल्हाड़ी
जिसे वह कंधे पर रखता है
और जंगल की ओर चल देता है
मेरी बस्ती के लोगों की दुनिया में
वह अकेली चीज है
जिस पर भरोसा किया जा सकता है
सिर्फ उस पर रोटी नहीं सेंकी जा सकती।

ईमानदारी से की गई सेवा के फलस्वरुप जो सत्ता मिलती है, वह मनुष्य को उदात्त बनाती है। महात्मा गाँधी

हिंदी साहित्य का इतिहास

आदिकाल के प्रसिद्ध रचनाकार

अमीर खुसरो

अमीर खुसरो खड़ी बोली हिंदी के आदि कवि हैं। वे आदिकाल के एक उल्लेखनीय और केंद्रीय रचनाकारों में से एक हैं। उन्होंने तेरहवीं–चौदहवीं शताब्दी में खड़ी बोली हिंदी का 'हिंदवी' के रूप में सूत्रपात किया। उन्होंने अपने फारसी ग्रंथ 'दीबाचा–ए– दीवाने गुर्रतुल कमाल" में खुद को हिंदवी का ऐसा शायर कहा है, जो अपने दोस्तों को हिंदवी में पद और छंद लिखकर प्रस्तुत करता है।

अमीर खुसरो का रचना संसार

अमीर खुसरो का रचना संसार संख्या और विषय दोनों ही दृष्टियों से विस्तृत है। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के अनुसार उन्होंने निन्यानवे पुस्तकों की रचना की, जिनमें बाईस उपलब्ध हैं। इतिहास, अध्यात्म, प्रेम–गाथाएँ आदि उनके वर्ण्य विषय हैं। अमीर खुसरो मुख्य रूप से फारसी के कवि हैं। फारसी भाषा पर उनका अप्रतिम अधिकार था। उनकी गणना महाकवि फिरदौसी, शेख सादिक और निजामी फारस के महाकवियों के साथ होती है।

अमीर खुसरो का साहित्य मसनवियों, मुकरियों एवं पहेलियों के रचनासागर में विस्तृत है। उन्होने 1298 से 1301 ई. की अवधि में पाँच रोमाण्टिक मसनवियाँ 'मल्लोल अनवर', 'शोरो खुसरो', 'मजनू लैला', 'आईने–ए–सिकन्दरी और 'हश्त विहिश्त' लिखीं जो पंच–गंज नाम से प्रसिद्ध हैं। ये मसनवियाँ खुसरो ने अपने धर्म–गुरु शेख निजामुद्दीन औलिया को समर्पित कीं । पद्य के अतिरिक्त खुसरो ने दो गद्य–ग्रन्थों की भी रचना की– 'खजाइनुल फतह', तथा 'एजाजयेखुसरवी', इसके अतिरिक्त देवलरानी खिज्रखाँ नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक मसनवी लिखी।

अमीर खुसरो को हिंदी से कितना लगाव था इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि वे अपने को हिंदुस्तान की तूती कहते हैं और और खुद को हिंदवी भाषा की मिठास का कायल बताते हैं। वे दीवान गुर्रतुलकमाल में कहते हैं:

तुर्क–ए–हिंदुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब,
चु मन तूती–ए–हिंदम अज रास्त पुरसी।
जे मन हिंदवी पुरस ता नग्ज गोयम,
शकर मिस्त्री न दारम कज अरब गोयम सुखन।।

अर्थात मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूँ, मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ। अगर वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो हिंदवी भाषा में पूछो। मैं तुम्हें हिंदवी में अनुपम बातें बता सकूँगा। मेरे पास मिस्र की शक्कर नहीं है जो अरबी में बात करूँ। यहाँ हिंदवी से तात्पर्य तेरहवीं–चौदहवीं शताब्दी की वह भाषा या बोली है जो आम जनता द्वारा बोली या समझी जाती थी। हिंदवी भाषा दरअसल खड़ी बोली है जिस पर वर्तमान हिंदी आधारित है। इसकी जड़ें संस्कृत में थीं, पर दिल्ली तथा उसके आसपास की अनेक भाषाओं के शब्द भी इसमें शामिल हैं। अमीर खुसरो बहुभाषाविद थे फलस्वरूप उन्होंने अपनी कविता समेत अन्य रचनाओं में जिस हिंदी का प्रयोग किया वह शुरू से ही सामासिक बनावट के साथ आगे बढ़ी।

अमीर खुसरो की रचनाओं में लोक जीवन

अमीर खुसरो का लोक जीवन से गहरा ताल्लुक था जिसमें उनका जीवन गुजरा, उसकी अनेक छवियों को उन्होंने अपनी कविता में प्रस्तुत किया। धार्मिक आडंबरों से दूर उनकी कविता सूफी विचार में गहरे डूब कर नए तरह के काव्य आस्वाद को रचने में सफल रही। लोकरंग में रथे–पगे खुसरो ने वसंत, सावन, बरखा, पनघट, हिंडोला (झूला), होली, चक्की, शादी–ब्याह, विदाई, साजन, बाबुल, ईश आराधना आदि पर गीतों की रचना की। उनके द्वारा रचित दोहों, गजलों और कव्वालियों में लोकरंग की अनुपम छटा नजर आती है।

लोक परंपरा की सबसे मजबूत बानगी उनकी पहेलियो में नजर आती है। लोक साहित्य में सबसे पहले अमीर खुसरो ने ही पहेलियों बनाने का रिवाज शुरू किया। संस्कृत साहित्य में गौण रूप में प्रहेलिका नाम से पहेलियाँ मिल जाती हैं लेकिन खुसरो ने इन्हें अपने बेमिसाल अंदाज में प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में दो तरह की पहेलियाँ नजर आती हैं– बूझ पहेली और बिन बूझ पहेली। बूझ पहेली में उत्तर पहेली में ही निहित होता है, जबकि बिन बूझ पहेली में अनुमान और युक्तियों के सहारे उत्तर हासिल किए जाते हैं। लोक संस्कृति की निरंतरता की सुवास समेटे इन पहेलियों के महत्व का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अभी भी लोगों की जुबां पर ये चढ़ी हुईं हैं। इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

एक नार वह दाँत दँतीली। पतली दुबली छैल छबीली।।
जब बा तिरियहि लागे भूख। सूखे हरे चबावे रूख।।
जो बताय वाही बलिहारी। खुसरो कहे वरे को आरी।।

– आरी (बूझ पहेली)

बिन बूझ पहेली का एक लोकप्रसिद्ध उदाहरण देखिए। अनुमान के सहारे इसका उत्तर पाना आसान होता है:

एक थाल मोतियों से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारो ओर वह थाली फिरे, मोती वासे एक ना गिरे।।

–आसमान (मोती–तारे, बिन बूझ पहेली)

लोकजीवन में प्रचलित मुकरियों और दो सखुना खूब लोकप्रिय हुए। इन्हें शुरू करने का श्रेय भी अमीर खुसरो को है। मुकरियों में पद्य शैली में सवाल, संभावना और उत्तर का जिक्र होता था, जैसे::

उछल–कूद के यह जो आया। धरा –ढका वह सब कुछ खाया।
दौड़ झपट जा बैठा अंदर। ऐ सखी साजन.. ना सखी बंदर।।

इस तरह अमीर खुसरो की कविताएँ लोक रंग में डूबे एहसासों की सफल और सुंदर अभिव्यक्तियाँ हैं। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि अपने लोक अहसासों के कारण ही उनकी कविताएँ हिंदी मन में शताब्दियों बाद भी रची–बसीं हैं।

भाषागत विशेषताएँ

अमीर खुसरो की विभिन्न रचनाओं में प्रयुक्त भाषा आखिर क्यों महत्वपूर्ण है? दरअसल उनकी भाषा लोक के करीब है। नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पुस्तक 'अमीर खुसरो' में ब्रजरत्न दास ने ठीक ही लिखा है, ''खुसरो को हुए सात सौ वर्ष व्यतीत हो गए किंतु उनकी कविता की भाषा इतनी सजी सँवरी और कटी–छँटी हुई है कि वह वर्तमान भाषा से बहुत दूर नहीं, अर्थात उतनी प्राचीन नहीं जान पड़ती। भाटों और चारणों की कविता एक विशेष प्रकार के ढाँचे में ढाली जाती थी। चाहे वह खुसरो के पहले की अथवा बाद की हो तो भी वह वर्तमान भाषा से दूर और खुसरो की भाषा से भिन्न और कठिन जान पड़ती है। इसका कारण साहित्य के संप्रदाय की रूढ़ि का अनुकरण ही है। चरणों की भाषा कविता की भाषा है बोलचाल की भाषा नहीं। ब्रजभाषा के 'अष्टछाप' आदि कवियों की भाषा भी साहित्य, अलंकार और परंपरा के बंधन से खुसरो के बाद की होने पर भी उससे कठिन और भिन्न है। कारण केवल इतना ही है कि खुसरो ने सरल और स्वाभाविक भाषा को ही अपनाया है, बोलचाल की भाषा में लिखा है, किसी सांप्रदायिक बंधन में पड़कर नहीं।'' खुसरो की भाषा के मिजाज अलग–अलग हैं। वे अभिधा की भाषा में कविता कहते हैं, साथ ही वे लक्षणा और व्यंजना की भाषा की मारक क्षमता का भी बेहतरीन उपयोग करते हैं। उनकी पहेलियों में लक्षणा के बेहतरीन उदाहरण मिल जाते हैं। उसी तरह उनके आध्यात्मिक दोहों/कव्वालियों मे व्यंजना शब्द शक्ति की झलक मिलती है। अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य की खूबियों के अनेक रंग हैं, जिन्हें देख कर यह समझ पाना मुश्किल हो जाता है कि यह खड़ी बोली हिंदी के बेहद आदिम रंग का आस्वाद है।

राजभाषा अनुभाग द्वारा प्रस्तुत.....

गतिविधियाँ

यौन उत्पीड़न की रोकथाम

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 08 दिसम्बर 2023 को ''यौन उत्पीड़न की रोकथाम'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को यौन उत्पीड़न रोकथाम के संबंध में जागरूक किया गया।

संरक्षा सप्ताह

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 4–10 मार्च 2024 तक 53वें ''राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह'' का आयोजन किया गया। इस दौरान इकाई में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

पर्यावरण दिवस

पर्यावरण और सतत विकास लक्ष्यों की रक्षा के लिए 10 जून 2024 को भारत सरकार टकसाल, नोएडा में एक वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। इस अवसर पर श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा एवं अन्य कार्यपालकों तथा कर्मचारियों द्वारा टकसाल परिसर सहित टाउनशिप में वृक्षारोपण किया गया था।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 21 जून 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें योग प्रशिक्षक द्वारा योग एवं प्राणायाम का सामूहिक अभ्यास कराया गया।

कम बोलते वाला मनुष्य कभी बिना सोचे-विचारे नहीं बोलेगा, वह अपना प्रत्येक शब्द तोलकर बोलने। – महात्मा गाँधी

स्वास्थ्य जाँच शिविर

मेट्रो अस्पताल, सेक्टर–12 द्वारा दिनांक 22 जुलाई 2024 को भारत सरकार टकसाल, नोएडा में ''स्वास्थ्य जांच शिविर'' का आयोजन किया गया, जिसमें हृदय परामर्श, फिजियोथेरेपी परामर्श, आहार विशेषज्ञ परामर्श, ईसीजी, ब्लड शुगर रैंडम, ब्लड प्रेशर, वजन और बीएमआई जैसे घटकों के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रशिक्षण

कार्यालय में 21 अगस्त 2024 ''स्वास्थ्य एवं सुरक्षा'' विषय पर प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ''स्वास्थ्य एवं सुरक्षा'' पर उपयोगी जानकारी देने के साथ–साथ सीपीआर प्रशिक्षण भी दिया गया।

गणतंत्र दिवस 2024

स्वतंत्रता दिवस 2024

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी द्वारा ''राजभाषा का हीरक जयंती वर्ष'' थीम पर स्मारक सिक्का जारी किया गया। माननीय गृहमंत्री द्वारा इस अवसर पर ''भारतीय भाषा अनुभाग'' की स्थापना का लोकार्पण भी किया गया।

"राजभाषा का हीरक जयंती वर्ष" पर जारी स्मारक सिक्का

भारत सरकार टकसाल, नोएडा

(भारत प्रतिभूति मुद्रण एवं मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

डी-2, सेक्टर-1, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आईएसओ: 9001:2015,14001:2015 (प्रमाणित)